

03 झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की जयंती आज

06 शिक्षा सीखने का भविष्य है

08 सरकार 30 नवंबर तक मुआवजा राशि बाँटकर बाढ़ पीड़ितों को बड़ी राहत पहुँचाएगी -

कौशल राजपूत, उप निदेशक (योजना शाखा) द्वारा एमसीडी स्कूलों में भर्ती ईडब्ल्यूएस छात्रों की ट्यूशन फीस की प्रतिपूर्ति में कथित भ्रष्टाचार के आरोप

संजय बाटला

शिक्षा निदेशालय की योजना शाखा में, विशेष रूप से उप निदेशक (योजना) श्री कौशल राजपूत के पर्यवेक्षण में, गंभीर अनियमितताएँ/भ्रष्ट आचरण सामने आ रहे हैं। ये अनियमितताएँ अनिवार्य प्रावधानों के तहत एमसीडी स्कूलों में दाखिला लेने वाले आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) के छात्रों की ट्यूशन फीस की प्रतिपूर्ति से संबंधित हैं। यह बात संज्ञान में आई है कि:

1. प्रतिपूर्ति प्रक्रिया पारदर्शी तरीके से नहीं की जा रही है।
2. ट्यूशन फीस दावों के वितरण में दुरुपयोग और हेरफेर के उदाहरण
3. वास्तविक लाभार्थियों (एमसीडी स्कूलों में दाखिला लेने वाले ईडब्ल्यूएस छात्र) को उनके हकदार प्रतिपूर्ति से वंचित किया जा रहा है, जबकि अयोग्य दावेदारों को अनुचित लाभ दिया जा रहा है।
4. ऐसी कार्यवाही सरकारी मानदंडों का धोर उल्लंघन है तथा सरकारी खजाने

को वित्तीय नुकसान पहुंचाती हैं। उप निदेशक (योजना), शिक्षा निदेशालय द्वारा जारी प्रतिबंधों पर टिप्पणियाँ उपरोक्त के समर्थन में, उप निदेशक (योजना), शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार द्वारा 12/08/2025 और 27/08/2025 को जारी प्रतिबंधों के संबंध में निम्नलिखित टिप्पणियाँ प्रस्तुत की जाती हैं, जिसमें निदेशक (शिक्षा) से अनुमोदन प्राप्त करने के बाद महत्वपूर्ण तथ्यों को छिपाया गया है:

- i) ऐसा प्रतीत होता है कि प्रतिबंध चुनिंदा आधार पर जारी किए गए हैं,
- ii) पिछले 5-6 वर्षों से बहुत पुराने और अमान्य लिखित दावों वाले स्कूलों को बिना उचित जांच के प्रतिपूर्ति के लिए विचार किया गया है, जिससे निपटान की प्रक्रिया पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं।
- iii) स्वीकृत प्रतियाँ जाँच के लिए संलग्न हैं ताकि यह पता लगाया जा सके कि

ऐसे पुराने दावों को बिना उचित सत्यापन के क्यों मंजूरी दे दी गई। संबंधित स्कूलों के दावों की जाँच आवश्यक है। जारी किए गए सभी प्रतिबंधों की तुरंत जाँच की जानी चाहिए और पारदर्शिता के हित में अगले आदेश तक इन स्कूलों को भुगतान जारी नहीं किया जाना चाहिए।

- iv) यह भी देखा गया है कि कई वैध दावों पर प्रतिपूर्ति के लिए विचार नहीं किया गया है, जिसके लिए रजिस्ट्रार के तहत धन की अनुपलब्धता का हवाला दिया गया है, जबकि संदिग्ध दावों को मंजूरी दे दी गई है।
- v) यह भी ध्यान देने योग्य है कि प्रतिशत भागीदारी के बिना कोई भी दावा पारित नहीं किया गया है, जो स्वीकृत प्रक्रिया में पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ गंभीर समझौता दर्शाता है। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, यह दृढ़तापूर्वक अनुरोध की जाती है कि: 12/08/2025 और 27/08/2025 को जारी सभी प्रतिबंधों की गहन जांच की जाएगी। जांच पूरी होने



तक इन प्रतिबंधों के तहत भुगतान रोक दिया जाएगा। छिपाए गए तथ्यों पर चुनिंदा प्रतिबंध जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय की जाएगी।

अधिकारी श्री कौशल राजपूत, उप निदेशक (योजना), शिक्षा निदेशालय के विरुद्ध उठ रही अनियमितताओं की जांच के बाद अगर सही पाई जाती है तो

एफआईआर दर्ज की जाए। यह मुद्दा सीधे तौर पर ईडब्ल्यूएस श्रेणी के छात्रों के कल्याण को प्रभावित करता है और उनकी शिक्षा को समर्थन देने के उद्देश्य

से बनाई गई योजना के उद्देश्य को ही विफल कर देता है। उपरोक्त के महानजर, यह अनुरोध किया जाता है कि उप निदेशक (योजना शाखा) सहित संबंधित अधिकारी (अधिकारियों) के खिलाफ एक विस्तृत जांच/सतर्कता जांच शुरू की जाए, ताकि जवाब देही तय की जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि एमसीडी स्कूलों में पढ़ने वाले वास्तविक ईडब्ल्यूएस लाभार्थियों तक सही प्रतिपूर्ति पहुँचे। कृपया इस तरह के भ्रष्टाचार की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए दोषी अधिकारियों के खिलाफ आवश्यक अनुशासनात्मक और कानूनी कार्रवाई की जाए। इसके अलावा, अनुरोध है कि ईडब्ल्यूएस छात्रों और स्कूलों के हित में पारदर्शिता के साथ अखिल वैध दावों के विश्लेषण और प्रसंस्करण के लिए एक नई टीम गठित की जाए।

दिल्ली परिवहन आयुक्त, दिल्ली पुलिस आयुक्त और प्रवर्तन शाखा (दिल्ली यातायात पुलिस और परिवहन विभाग) के कारण दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली के आदेश दरकिनार



संजय बाटला

सड़को पर चलने वाले जाम, दुर्घटनाओं और असुरक्षा से दिल्ली की सड़कों को मुक्त करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 31 जुलाई 2014 को उच्च न्यायालय द्वारा आदेश जारी किया गया था और दिसम्बर 2014 को उपराज्यपाल दिल्ली ने 236 सड़कों की सूची जारी कर घोषणा के माध्यम से उन सड़कों पर ई-रिक्शा चलाने पर प्रतिबंध लगाया था जो दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के अनुरूप सार्वजनिक सुरक्षा और यातायात नियंत्रण के लिए निर्धारित की गई थी पर दिल्ली में प्रवर्तन शाखाओं ने उसे दरकिनार कर रखा है और परिवहन विभाग के आयुक्त, दिल्ली पुलिस आयुक्त भी बैठे हैं सब कुछ देखते हुए चुप आँख क्यों ?

आपकी जानकारी हेतु बता दें कि दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश और उपराज्यपाल द्वारा जारी घोषणा के खिलाफ कई लोगों ने उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी पर दिल्ली की सड़कों पर सुरक्षा और यातायात सुरक्षा को मद्देन रखते हुए उच्च न्यायालय ने ई-रिक्शा पर पारबंदियाँ लागू रखी

अब आप को बताते हैं इन 236 सड़कों की नियोजन और वर्गीकरण के मानदंड क्या थे ? दिल्ली में ई-रिक्शा पर लगी रोक के तहत 236 सड़कों की सूची बनाते समय नियोजन और वर्गीकरण के मुख्य मानदंड निम्न थे:

सुरक्षा और प्रमुख मार्गों का ध्यान सूची में शामिल सड़कें वे थीं जो मुख्य यातायात के मार्ग, वीआईपी क्षेत्र, और संवेदनशील स्थलों से गुजरती थीं जैसे कि बाराखंबा रोड, राजपथ, तिलक मार्ग, आदि। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इन क्षेत्रों में सार्वजनिक और सरकारी सुरक्षा बाधित न हो, वहाँ ई-रिक्शाओं के चलने पर प्रतिबंध लगाया गया।

ट्रैफिक प्रबंधन जिन सड़कों पर यातायात का दबाव अधिक था या जहाँ भारी वाहन और तेज गति से वाहन चलते हैं, उन पर ई-रिक्शा की अनुमति नहीं दी गई क्योंकि उनकी धीमी गति ट्रैफिक जाम और दुर्घटनाओं का कारण बन सकती थी।

पब्लिक सेफ्टी और नियम पालन वे सड़कें चयनित करती हैं जहाँ ई-रिक्शा संचालक नियमों का उल्लंघन करते पाए गए या जैसे कोई उचित कानूनी पंजीकरण, हेलमेट पालन, और यातायात

नियमों का पालन न हो। संवेदनशील और प्रशासनिक क्षेत्र दिल्ली के प्रशासनिक, सरकारी और इतिहासिक क्षेत्रों को विशेष सुरक्षा के तहत रखा गया, जिनमें ई-रिक्शाओं को प्रतिबंधित किया गया ताकि सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था बाधित न हो।

ये मानदंड दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश और उपराज्यपाल के निर्देशों के परिप्रेष्य में तय किए गए थे, ताकि राजधानी में ट्रैफिक और सुरक्षा की उचित व्यवस्था बनाई जा सके।

अब आप को बताते हैं इन प्रतिबंधों के खिलाफ कौन से कानूनी कदम उठाए गए थे

दिल्ली में ई-रिक्शा प्रतिबंध के खिलाफ कई कानूनी कदम उठाए गए थे। प्रमुख कानूनी कार्रवाई में एक जर्नलिट याचिका (PIL) शामिल थी, जिसे सामाजिक कार्यकर्ता शहनवाज खान ने दायर किया था। इस याचिका में ई-रिक्शाओं को बिना पंजीकरण और लाइसेंस के चलाने को असंवैधानिक और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा बताया गया था। इस याचिका पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने 2014 में ई-रिक्शा पर प्रतिबंध लगा दिया था ई-रिक्शा ऑपरेटर्स और अन्य पक्षों ने इस प्रतिबंध की समीक्षा याचिका दायर की थी, जिसमें सरकार के द्वारा बनाए गए अंतरिम दिशानिर्देशों के तहत ई-रिक्शा चलाने की अनुमति मांगी गई थी, लेकिन उच्च न्यायालय ने अपने फैसले को बरकरार रखा था और कहा कि वर्तमान नियमों के तहत ये वाहन अवैध हैं जब तक केंद्र सरकार इनके संचालन के लिए कानून नहीं बनाती।

इसके अतिरिक्त, कई ई-रिक्शा चालक और उनके संगठन इस प्रतिबंध के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ते रहे, और समय-समय पर दिल्ली सरकार और पुलिस की कार्रवाई के खिलाफ भी दलीलें दी गईं, जिसमें अवैध पंजीकरण, रजिस्ट्रेशन और लाइसेंस के मुद्दे थे।

सारांश में, कानूनी कदम मुख्यतः याचिकाओं और अदालतों में संगठित विरोध के रूप में उठाए गए, जो ई-रिक्शा के संचालन के नियमों और प्रतिबंधों को चुनौती देते थे, लेकिन दिल्ली उच्च न्यायालय ने सुरक्षा और ट्रैफिक प्रबंधन कारणों से प्रतिबंध को लागू रखा

अब आपको बताते हैं ई-रिक्शा को दिल्ली उच्च

न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली ने किन सड़कों पर चलने से रोकें और कब ई-रिक्शा को दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली ने किन सड़कों पर चलने से रोकें और कब दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली द्वारा ई-रिक्शाओं को राजधानी की 236 सड़कों पर चलने से रोकें गया था, जिसमें मुख्य रूप से वीआईपी और प्रमुख मार्ग शामिल हैं। यह रोक 2014 में अधिसूचित की गई, जब लि. गवर्नर नजीब जंग के अनुमोदन के बाद दिल्ली ट्रांसपोर्ट विभाग ने नोटिफिकेशन जारी किया था।

किन सड़कों पर रोक लगी ? यह प्रतिबंधित सड़कों की सूची दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई है, विशेष रूप से:

- *नई दिल्ली*: 77 सड़कें, जैसे बाराखंबा रोड, तिलक मार्ग, राजपथ, अशोक रोड, तुगलक रोड, शाहजहाँ रोड, रफी मार्ग, फिरोजशाह रोड, संसद मार्ग, और औरंगजेब रोड।
- *साउथ दिल्ली*: 38 मार्ग, जैसे लाला लाजपत राय मार्ग, ओरोबिंदो मार्ग, लोधी रोड, RTI, नेल्सन मंडेला मार्ग, सीरी फोर्ट रोड, NH-8, अरुणा आसफ अली रोड।
- *ईस्ट दिल्ली*: विकास मार्ग, यूपी लिंक रोड, शकूर चौक से मंदर डेयरी रोड, पुस्ता रोड, जीटी रोड, लोनी रोड।
- *वेस्ट दिल्ली*: जेल रोड, आउटर रिंग रोड, पायल सिनेमा रोड, मायापुरी रोड।
- *थर्ड-ईस्ट, साउथ-वेस्ट, नॉर्थ आदि*: इन जिलों की कुछ विशेष सड़कें भी सूचीबद्ध थीं, जैसे रिंग रोड, कैप्टन गौर मार्ग, मथुरा रोड।

कब लगी रोक ? दिल्ली उच्च न्यायालय ने 31 जुलाई 2014 को आदेश दिया था कि ई-रिक्शा रजिस्ट्रेशन सेफ्टी के मुद्दे को देखते हुए बैन किए जाएँ। इसके बाद दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल ने 10-11 दिसंबर 2014 को 236 सड़कों के लिए नोटिफिकेशन जारी किया।

वजह यह रोक दिल्ली के सार्वजनिक सुरक्षा, ट्रैफिक और नागरिकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लगाई गई थी, क्योंकि बिना नियमों के ई-रिक्शाओं का संचालन खतरनाक माना गया था। इन प्रतिबंधों का उद्देश्य मुख्य यातायात मार्गों, वीआईपी क्षेत्रों और संवेदनशील जंक्शनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना था।

प्रयोजित याचिकाओं के मुख्य तर्क और फैसलों का सार प्रयोजित याचिकाओं के मुख्य तर्क और दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसलों का सार निम्न है: याचिकाकर्ताओं के तर्क ई-रिक्शा गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए आवश्यक सार्वजनिक परिवहन का साधन हैं, जिससे रोजगार और सामान्य दुलाई का भी जरिया है। उन्होंने कहा कि ई-रिक्शा संचालन पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाना संवैधानिक अधिकारों और स्थानीय लोगों के आजीविका के अधिकार के विरुद्ध है (व्याचिकाकर्ताओं ने केंद्र और राज्य सरकारों से ई-रिक्शाओं के लिए नियमन और पंजीकरण का उचित कानून बनाने की मांग की, ताकि उनका सुरक्षित और नियंत्रित संचालन हो सके। यह भी तर्क दिया गया कि प्रतिबंध लगाने से आम जनता को आर्थिक और यात्रा में भारी कठिनाई होती है। उच्च न्यायालय के फैसलों का सार दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस पर बल दिया कि ई-रिक्शा सार्वजनिक सुरक्षा, यातायात की जाम तथा नियमों के उल्लंघन के कारण खतरनाक साबित हो रहे थे। अदालत ने कहा कि जब तक ई-रिक्शा के लिए उपयुक्त रूप से नियम और मानक न बनें, तब तक बिना नियंत्रण के उनका संचालन शहर के लिए खतरा है। न्यायालय ने ई-रिक्शाओं को 236 प्रमुख और संवेदनशील सड़कों पर चलने से प्रतिबंधित कर दिया और इसे सार्वजनिक हित में आवश्यक माना। अदालत ने सरकारों को निर्देश दिया कि वे ई-रिक्शा संचालन के लिए कड़े सुरक्षा और पंजीकरण नियम बनाएँ।

निष्कर्ष याचिकाकर्ताओं का उद्देश्य था ई-रिक्शा को पकड़ा जाना या पूरी तरह प्रतिबंधित होने से बचना, जबकि न्यायालय ने सार्वजनिक सुरक्षा, ट्रैफिक प्रबंधन और नियम पालन को सर्वोपरि रखा। इसीलिए, उच्च न्यायालय ने ई-रिक्शा पर पारबंदियाँ लगाते हुए उन्हें सुरक्षित और नियंत्रित संचालन के लिए पंजीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया।

अब दिल्ली की सड़कों पर ई-रिक्शा के कारण धीमी गति, जाम, दुर्घटनाएँ और नुकसान के लिए जन समुदाय किसे जिम्मेदार मानती है स्वयं फैसला करें।

प्रदूषण न फैलाएं - पर्यावरण बचाएं



चंद्र मोहन

पर्यावरण, प्रदूषण और बचाव एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। जहाँ पर्यावरण वह प्राकृतिक वातावरण है जिसमें हम रहते हैं, प्रदूषण इस वातावरण का हानिकारक दूषित होना है, और बचाव इस प्रदूषण को रोकने और ठीक करने के उपाय हैं। बचाव के उपायों में पेड़ लगाना, कचरा प्रबंधन, प्लास्टिक का कम उपयोग, ऊर्जा की बचत और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग शामिल हैं।

पर्यावरण- पर्यावरण एक व्यापक शब्द है जिसमें हवा, पानी, मिट्टी, पौधे और जीव-जंतु शामिल हैं। यह प्राकृतिक वातावरण है जिसमें सभी जीवित प्राणी अपना जीवन यापन करते हैं। मानव गतिविधियों के कारण पर्यावरण प्रदूषित होता है, जिससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है।

प्रदूषण- प्रदूषण हवा, पानी और मिट्टी के अवांछित और हानिकारक दूषित होने को कहते हैं। वायु प्रदूषण: हवा में हानिकारक गैसों, धूल और कणों का मिलना। जल प्रदूषण: नदियों, तालाबों और अन्य जल स्रोतों में औद्योगिक कचरा, रसायन या मल का मिलना। ध्वनि प्रदूषण: तेज शोर-शराबा, जो मनुष्यों और वन्यजीवों के लिए हानिकारक है। प्लास्टिक प्रदूषण: प्लास्टिक कचरे का जमा होना। बचाव (प्रदूषण को कम करने के उपाय) - वृक्षारोपण: अधिक पेड़ लगाना और वनों को कटाई को रोकना पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। प्लास्टिक का कम उपयोग: प्लास्टिक की थैलियों की जगह कपड़े या कागज के थैले इस्तेमाल करें। सार्वजनिक परिवहन और साइकिल का उपयोग: निजी वाहनों का उपयोग कम करें और सार्वजनिक परिवहन, साइकिल या पैदल चलने को प्राथमिकता दें। ऊर्जा की बचत: बिजली के उपकरणों को बंद करें जब वे उपयोग में न हों और ऊर्जा-कुशल बल्बों का उपयोग करें। कचरा प्रबंधन: कचरे को कूड़ेदान में डालें और रिसाइकलिंग को अपनाएँ। जल संरक्षण: पानी का दुरुपयोग न करें और जल स्रोतों को प्रदूषित न से बचाएँ। स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग: सौर या पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करें। जागरूकता फैलाएँ: लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करें।

हम हवा को खराब करते हैं, प्रदूषण स्वयं हवा में खराब नहीं होता। हवा की गुणवत्ता को खराब करने के लिए मनुष्य विभिन्न स्रोतों से हानिकारक कणों और गैसों का उत्सर्जन करते हैं, जैसे कि वाहनों, उद्योगों और कचरा जलाने से निकलने वाला धुआँ। यूरोपीय पर्यावरण एजेंसी (EEA) बताती है कि यह प्रदूषक हवा, पानी और मिट्टी को नुकसान पहुँचाते हैं, और हम इसे अंदर लेते हैं। प्रदूषण को कम करके पर्यावरण को बचाना हर किसी की जिम्मेदारी है। इसके लिए प्लास्टिक का उपयोग कम करें, कचरा सही जगह पर फेंकें, पेड़-पौधे लगाएँ, ऊर्जा की बचत करें और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग।

पर्यावरण संरक्षण के लिए आप क्या कर सकते हैं: कचरा प्रबंधन - कचरा कूड़ेदान में ही डालें, इधर-उधर न फेंके। प्लास्टिक और पॉलिथीन का इस्तेमाल कम करें। रीसाइकलिंग को बढ़ावा दें और कचरे को सही तरीके से अलग-अलग करें। ऊर्जा बचाएँ: जब जरूरत न हो तो लाइट और पंखे बंद कर दें। ऊर्जा-कुशल उपकरण इस्तेमाल करें। गाड़ी का नियमित रखरखाव करवाएँ ताकि वह कम ईंधन का उपयोग करे।

पेड़-पौधे लगाएँ: अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ और उनकी देखभाल करें। पौधों को पानी दें और उनकी रक्षा करें। स्वच्छता बनाए रखें: सार्वजनिक स्थानों पर थूकें नहीं और शौचालय का उपयोग करें।

धैर्य से अपना कर्तव्य निभाएँ: सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें: जहाँ संभव हो, सार्वजनिक परिवहन या साइकिल का उपयोग करें। गाड़ी को ठीक-ठाक स्थिति में रखें। जागरूकता फैलाएँ: अपने परिवार और दोस्तों को पर्यावरण बचाने के महत्व के बारे में बताएँ।

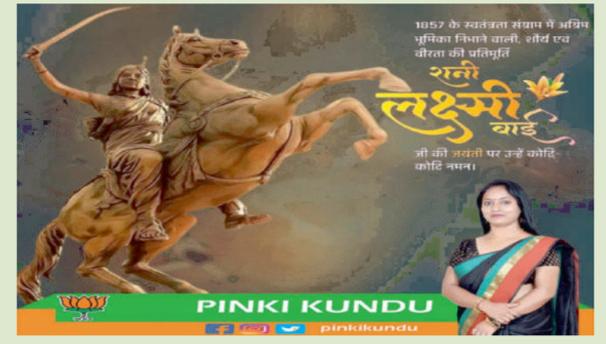
प्रदूषण का अर्थ है - वायु, जल, मिट्टी आदि का अवांछित दूषित होना, जिसका सजीवों पर प्रत्यक्ष रूप से विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान द्वारा अन्य अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ते हैं। वर्तमान समय में पर्यावरणीय अवनयन का यह एक प्रमुख कारण है। प्रदूषण का अर्थ है पर्यावरण में अवांछित तत्वों का मिलना, जिससे पर्यावरण और सभी जीव-जंतुओं को नुकसान पहुँचाते हैं। इसके प्रमुख प्रकार हैं वायु प्रदूषण (हवा का दूषित होना), जल प्रदूषण (पानी का दूषित होना), और मृदा प्रदूषण (मिट्टी का दूषित होना)। इनके अलावा ध्वनि प्रदूषण, प्रकाश प्रदूषण और तापीय प्रदूषण जैसे अन्य प्रकार भी हैं।

प्रदूषण के प्रकार वायु प्रदूषण: उद्योगों, वाहनों, और अन्य गतिविधियों से निकलने वाले धुएँ और कणों के कारण हवा का दूषित होना। जल प्रदूषण: नदियों, झीलों और महासागरों में औद्योगिक कचरा, सीनेज और रासायनिक अपशिष्टों के मिलने से पानी का दूषित होना। मृदा प्रदूषण: कृषि में कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग, औद्योगिक कचरा और अन्य अपशिष्टों को अनुचित तरीके से फेंकने से मिट्टी का दूषित होना। ध्वनि प्रदूषण: अत्यधिक शोर, जैसे कि यातायात, निर्माण कार्य और लाउडस्पीकर से होने वाली ध्वनि से होता है। प्रकाश प्रदूषण: शहर क्षेत्रों में अत्यधिक और अकुशल कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था से होता है। तापीय प्रदूषण: पानी के तापमान में वृद्धि या कमी से होता है, जो अक्सर उद्योगों के कारण होता है। पर्यावरण को बचाने के लिए हम कई छोटे-छोटे कदम उठा सकते हैं, जैसे कि पेड़ लगाना, प्लास्टिक का इस्तेमाल कम करना, बिजली बचाना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना और पानी का सदुपयोग करना। अपशिष्ट को अलग-अलग करके रीसायल करना, स्थानीय और जैविक भोजन खाना और ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग करना भी इसमें सहायक होता है। दैनिक जीवन में अपना प्लास्टिक का कम उपयोग करें: सिंगल-यूज प्लास्टिक जैसे पॉलिथीन बैग से बचें और दोबारा इस्तेमाल होने वाले बैग का उपयोग करें। पानी बचाएँ: नल को खुला न छोड़ें और अनावश्यक रूप से पानी बर्बाद न करें। डिशवाशर का उपयोग करते समय, बर्तनों को धोने से पहले साफ करने से बचें। बिजली बचाएँ: जब कोई उपकरण इस्तेमाल में न हो, तो उसे बंद कर दें। एलईडी बल्ब जैसे ऊर्जा-कुशल प्रकाश व्यवस्था का उपयोग करें। कम खपत करें और दोबारा इस्तेमाल करें: ऐसी चीजें चुनें जिनका दोबारा उपयोग हो सके और कम इस्तेमाल करें। सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें: जब संभव हो, तो कार की बजाय पैदल, साइकिल या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें। भोजन और खरीदारी की आदतें स्थानीय भोजन खाएँ: स्थानीय और जैविक किसानों से भोजन खरीदें और उनका समर्थन करें। मांस का सेवन कम करें: अपने भोजन में मांस का सेवन कम करने पर विचार करें। अपशिष्ट प्रबंधन कचरे को अलग करें: घरेलू कचरे को अलग-अलग करें और रीसायल करके ताकि लैंडफिल पर बोझ कम हो। खाद बनाएँ: घर पर खाद बनाने से कचरा कम करने में मदद मिलती है। अन्य महत्वपूर्ण कार्य पेड़ लगाएँ: एक पेड़ लगाएँ और उसकी देखभाल करें, क्योंकि पेड़ लगाना पर्यावरण संरक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। रसायनों का प्रयोग कम करें: बागवानी और खेती में रसायनों और कीटनाशकों का उपयोग कम करें। जागरूकता फैलाएँ: पर्यावरण को बचाने के लिए दूसरों को भी जागरूक करें और अपने पड़ोसों की सफाई में शामिल हों।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

पिंकी कुंडू महासचिव, "खुब लड़ी मर्दाना, वह तो झांसी वाली रानी थी" 1857 की स्वतंत्रता संग्राम में अपने अतुलनीय पराक्रम, युद्धकौशल और अदम्य साहस से भारतीय इतिहास को स्वर्णिम अध्याय देने वाली वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई जी की जयंती पर कोटि-कोटि नमन। मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाली, नारी शक्ति की प्रतीक और स्वतंत्रता संग्राम की

प्रेरणाशक्ति लक्ष्मीबाई जी का जीवन देशभक्ति, त्याग और अद्वितीय वीरता का अनुपम उदाहरण है। उनकी निर्भीकता, संघर्ष और राष्ट्रप्रेम आज भी हर भारतीय में प्रेरणा का संचार करते हैं। आज झांसी की रानी के बलिदान व तेजस्विता को शत-शत नमन। <https://tolwa.com/about.html> tolwadelhi@gmail.com tolwaindia@gmail.com



स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

सांस फूलने की परेशानी से राहत

सांस फूलना क्या होता है ? बहुत से लोग गलतफहमी के चलते डिस्पनिया (सांस फूलना Sans foolna) रोग को दमा रोग ही समझ लेते हैं। लेकिन डिस्पनिया (सांस फूलना) और दमा (एस्थमा) रोग में थोड़ा सा फर्क होता है। कई लोगों को गलतफहमी होती है कि मोटा होने की वजह से ही सांस फूलती है पर ऐसा कुछ नहीं है, पतले लोगों की भी ऐसे ही सांस फूलती है और इसका कारण हमारे शरीर में नही अपितु पर्यावरण में बढ़ रहे प्रदूषण, अस्वच्छ हवा में सांस लेना और गलत कार्यशैली हो सकती है।

सांस फूलने के कारण सांस फूलने का रोग 2 प्रमुख कारणों से हो सकता है।

1. ज्यादा उम्र के लोगों को बारिश के मौसम में सांस की नली के पुराने जुकाम आदि रोगों के कारण।

2. दिल की धड़कन का काफी तेज चलने के कारण।

सांस फूलने का प्रभावी और घरेलू इलाज अंजीर जिन लोगो की सांस फूलती है, उनके लिए अंजीर अमृत के समान है क्योंकि अंजीर छाती में भिगोकर रख दीजिये और सुबह खाली पेट नाते से पहले उन अंजीरों को खूब चबाकर खा लीजिये। उसके बाद वह पानी भी पी लें। इस नुस्खे का प्रयोग लगातार एक महीने तक कीजिये। इसके प्रयोग से फर्क आपको खुद ही महसूस होने लगेगा। इन्हें समूह

तुलसी (Basil) और सौंठ (dry ginger) का काढ़ा तुलसी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है और श्वसन तंत्र पर नई प्रदूषण और एलर्जी के हमले से रक्षा करने में समर्थ है।

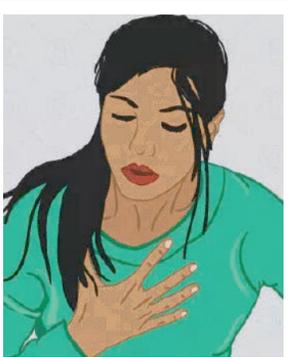
इसलिए जिनको भी सांस फूलने की या दमा की शिकायत हो उन लोगो को तुलसी से बने इस काढ़े का इस्तेमाल अवश्य ही करना चाहिए। इसके लिए आधा कप पानी में 5 तुलसी की पत्ती, एक चुटकी सौंठ पाउडर, काला नमक और काली मिर्च डालकर उबाल लें। ठंडा करके जब यह काढ़ा गुनगुना सा रहे जाए तब इसका सेवन करें। नित्य प्रति इस काढ़े के सेवन से आपके सांस फूलने की समस्या जड़ से समाप्त हो जाएगी।

अजवायन सांस फूलने की समस्या अक्सर श्वास नली में सूजन या श्वास नली में कचरा आ जाने की वजह से ही उत्पन्न होती है। श्वास नली को साफ करने का सबसे प्रभावी तरीका होता है - स्टीम या भाप लेना। भाप लेने से यदि श्वास नली में सूजन है तो उसमें आराम हो जाता है और कचरा भी निकल जाता है तो इसके लिए आपको अजवायन पीसकर पानी में उबलनी है। फिर इस अजवायन वाले पानी की भाप लेंनी है। क्योंकि अजवायन की भाप सूजन को खत्म और दमे और सांस फूलने की समस्या में राहत दिलाती है।

तिल का तेल (Sesame oil) यदि ठंड की वजह से छाती जाम हो जाए या रात के समय दमे का प्रकोप बढ़ जाए और सांस ज्यादा फूलने लगे तो तिल के तेल को हल्का गर्म करके छाती और कमर पर गरम तेल की सेक करें। इस प्रकार आपकी छाती खुल जायेगी और आपको सांस फूलने की समस्या में राहत मिलेगी।

अंगूर (grapes) सांस फूलने या दमा की समस्या में अंगूर बहुत लाभदायक होता है। इस समस्या में आप अंगूर भी खा सकते हैं या अंगूर का रस का भी सेवन कर सकते हैं। कुछ चिकित्सकों का तो यह दावा है कि दमे के रोगी को अंगूरों के बाग में रखा जाए तो दमा, सांस फूलने या कोई भी श्वसन सम्बन्धी समस्या में शीघ्र लाभ पहुंचता है।

चौलाई (Amaranth) के पत्तों का रस



सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि चौलाई के पत्तों का ताजा रस निकालकर और उसमें थोड़ा शहद मिलाकर प्रतिदिन सेवन किया जाए तो अतिशीघ्र लाभ पहुंचता है। चौलाई के पत्तों का प्रयोग आप किसी भी रूप में कर सकते हैं। चाहे तो चौलाई के पत्तों का साग भी खा सकते हैं। चौलाई के पत्ते इस समस्या में रामबाण औषधि है। इन्हें समूह

लहसुन (Garlic) लहसुन भी सांस फूलने की समस्या में अत्यंत लाभकारी औषधि का कार्य करता है। इसके लिए लहसुन की 3 कलियों को दूध में उबालना है और फिर उस दूध को छानकर सोने से पूर्व पीना है। यदि यह इसके बाद कुछ भी न खाये या पिए। कुछ ही दिनों के निरन्तर प्रयोग से आपको इसके चमत्कारी परिणाम देखने को मिलेंगे।

सौंफ (Fennel) सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि सौंफ का प्रयोग दैनिक दिनचर्या में हर रोज किया जाए तो आपको कभी सांस फूलने की समस्या आणी ही नहीं।

क्योंकि सौंफ में बलगम को साफ करने के गुण विद्यमान होते हैं। यदि दमे के रोगी और सांस फूलने वाले रोगी नियमित रूप से इसका काढ़ा इस्तेमाल करते रहें तो निश्चित रूप से इस समस्या से निजात मिल जाएगी।

लौंग (Cloves) और शहद (Honey) लौंग और शहद का काढ़ा पीने से श्वास नली की रुकावट दूर हो जाती है और श्वसन तंत्र मजबूत बनता है। इसके लिए चार-छः लौंग को एक कप पानी में उबाल लें और फिर उसमें शहद मिलाकर दिन में तीन बार थोड़ा-थोड़ा पीने से सांस फूलने की समस्या एकदम ठीक हो जाती है।

हींग (Asafoetida) सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि हींग का प्रयोग दैनिक दिनचर्या में हर रोज किया जाए तो आपको कभी सांस फूलने की समस्या आणी ही नहीं। (बाजरे के दाने जितनी हींग को दो चम्मच शहद में मिला लें। इसको दिन में तीन बार थोड़ा-थोड़ा पीने से सांस फूलने की समस्या एकदम ठीक हो जाती है।

नींबू (lemon) का रस सांस फूलने या दमा की समस्या में नींबू का रस गरम जल में मिलाकर पीते रहने से यह समस्या धीरे धीरे जड़ से खत्म हो जाती है। सांस फूलने की समस्या में केला अधिक मात्रा में नहीं खाना चाहिए। पानी हल्का गरम पीना ही लाभकारी होता है।

एसिड बनाने वाले पदार्थ न ले दमा या सांस फूलने की समस्या होने पर भोजन में कार्बोहाइड्रेट, चिकनाई एवं प्रोटीन जैसे एसिड बनाने वाले पदार्थ कम मात्रा में ही लें क्योंकि इनसे शरीर में एसिड बनता है जिससे श्वसन में बाधा उत्पन्न होती है इसलिए ताजे फल, हरी सब्जियां तथा अंकुरित चने जैसे क्षारीय खाद्य पदार्थों का सेवन भरपूर मात्रा में करें।

रोज 1 चम्मच अश्वगंधा खाने से क्या होता है?

अश्वगंधा का सेवन शरीर के साथ-साथ बीमारियों से बचाव के लिए लाभकारी है, लेकिन अक्सर लोगों को अश्वगंधा का सेवन कैसे और कब करना चाहिए यह नहीं पता है।

रोज 1 चम्मच अश्वगंधा खाने से क्या होता है। प्रकृति में ही सेहत का राज छिपा हुआ है, क्योंकि यह शारीरिक और मानसिक हेल्थ दोनों को बेहतर बनाती है। यह हमें शुद्ध हवा, पानी और पौष्टिक भोजन देती है, तनाव कम करती है, और रोग-प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्यूनिटी को बढ़ाती है। ऐसे ही आयुर्वेद में कई ऐसी जड़ी-बूटियां हैं, जो महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए फायदेमंद हैं। बस इनकी सही पहचान और सही इस्तेमाल की जानकारी होना बहुत ही जरूरी है। ऐसी ही एक जड़ी बूटी अश्वगंधा है। अश्वगंधा का सेवन शरीर के साथ-साथ बीमारियों से बचाव के लिए लाभकारी है, लेकिन अक्सर लोगों को अश्वगंधा का सेवन कैसे और कब करना चाहिए यह नहीं पता है।

भारत में 74 प्रतिशत लोग स्ट्रेस से पीड़ित हैं और 88 प्रतिशत एंजायटी से पीड़ित हैं। अश्वगंधा एक ऐसी हर्ब है, जो प्रजनन क्षमता बढ़ाने, तनाव कम करने, नींद की कमी दूर करने, चिंता से छुटकारा दिलाने और मांसपेशियों को मजबूत बनाने के साथ कई फायदे पहुंचाए।

प्रजनन क्षमता में वृद्धि कई अध्ययनों के अनुसार, अश्वगंधा टेस्टोस्टेरोन उत्पादन को बढ़ाकर



पुरुषों में प्रजनन क्षमता बढ़ाने में मदद कर सकता है, जिससे शुक्राणुओं की मात्रा और गतिशीलता में वृद्धि होती है। इसके अलावा अश्वगंधा हार्मोनल संतुलन में सुधार, प्रजनन अंगों के बेहतर कामकाज को बढ़ावा देने और गर्भपात के इतिहास वाली महिलाओं में गर्भधारण को मजबूत करके महिलाओं में प्रजनन क्षमता बढ़ाने में मदद कर सकता है।

मांसपेशियों को मजबूत मांसपेशियों को मजबूत बनाए रखने के लिए अश्वगंधा बहुत ही फायदेमंद होती है। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि यह मांसपेशियों के निर्माण और ताकत को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

इम्यूनिटी बूस्ट अश्वगंधा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्यूनिटी को मजबूत बनाने में भी मदद करता है।

जीभ पर दिखते हैं विटामिन-B12 की कमी के 3 बड़े संकेत, आज ही कर लें चेक हल्के में न लें जीभ पर नजर आने वाले विटामिन-B12 की कमी के ये संकेत

आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी और खान-पान में लापरवाही के कारण एक 'साइलेंट किलर' हमारी सेहत को नुकसान पहुंचा रहा है - और वह है विटामिन B12 की कमी (Vitamin-B12 Deficiency)। यह विटामिन न सिर्फ आपकी नसें, बल्कि आपके दिमाग और खून को भी दुरुस्त रखता है।

इस दौरान अक्सर हम थकान, कमजोरी या सुस्ती को हल्के में लेते हैं, लेकिन अगर आप अपनी जीभ पर दिखने वाले इन 3 बड़े संकेतों (B12 Deficiency Tongue Signs) को पहचानना सीख लें, तो आप नसों के स्थायी नुकसान से बच सकते हैं। आइए जानते हैं कि हमारी जीभ कैसे हमें विटामिन B12 की कमी के बारे में आगाह करती है।

छोटे-छोटे दाने होते हैं जिन्हें 'पैपिला' कहते हैं। जब B12 की कमी होती है, तो ये पैपिला सिकुड़कर गायब होने लगते हैं, जिससे जीभ की ऊपरी सतह बिल्कुल चिकनी और चमकदार दिखने लगती है।

इस स्थिति को 'ग्लोसिसिटिस' (Glossitis) कहा जाता है। आपकी जीभ का रंग भी सामान्य गुलाबी से बदलकर गहरा लाल या 'बीफी रेड' हो सकता है। यह चिकनी, लाल जीभ खाना खाने, खासकर मसालेदार या गर्म खाना खाने पर, बहुत दर्द और जलन पैदा कर सकती है।

यह भी विटामिन B12 की कमी का एक बड़ा संकेत हो सकता है। चूंकि यह विटामिन सेल रिन्यूअल के लिए जरूरी है, इसलिए जब इसकी कमी होती है, तो मुंह के अंदर और जीभ पर छोटे-छोटे घाव या

अल्सर बनने लगते हैं। ये छाले न सिर्फ खाने-पीने में तकलीफ देते हैं, बल्कि ये शरीर में चल रही एक बड़ी पोषण संबंधी कमी की ओर इशारा करते हैं। कई बार ये छाले दर्दनाक होते हैं और बार-बार लौटकर आते हैं, जिसे नजरअंदाज करना सही नहीं है।

जीभ में झुनझुनी या सुन्नपन महसूस होना

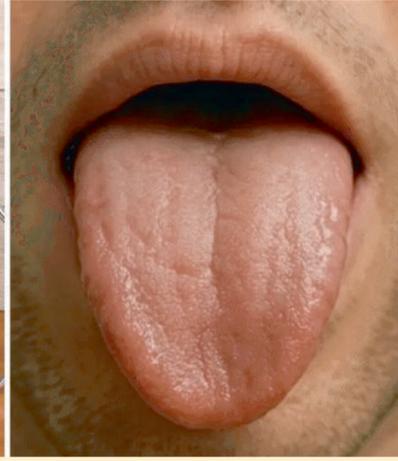
विटामिन-बी12 सीधे तौर पर हमारी नर्वस सिस्टम को सेहत से जुड़ा हुआ है। इसकी कमी से नसों को नुकसान पहुंचता है। यही कारण है कि कुछ लोगों को जीभ पर लगातार जलन, चुभन या अजीब सी झुनझुनी महसूस हो सकती है, जिसे 'लिंगुअल पैरेस्थीसिया' भी कहते हैं।

कई बार उन्हें लगता है जैसे जीभ पर सूई चुभ रही है या कुछ जल रहा है, जबकि

बाहर से कोई घाव दिखाई नहीं देता। अगर आप थकान, कमजोरी के साथ-साथ जीभ पर इस तरह की अजीब सनसनी महसूस करते हैं, तो आपको तुरंत डॉक्टर से सलाह लेकर अपना B12 स्तर (Vitamin B12 Level) जांच करवा लेना चाहिए।

क्या करें? अगर आप ऊपर दिए गए कोई भी लक्षण महसूस कर रहे हैं, तो घबराएं नहीं। तुरंत एक डॉक्टर या स्वास्थ्य विशेषज्ञ से मिलें और अपना विटामिन B12 का ब्लड टेस्ट करवाएं।

सही समय पर पहचान और डॉक्टर की सलाह से विटामिन B12 के सप्लीमेंट्स या इन्जेक्शन लेकर इस कमी को आसानी से पूरा किया जा सकता है, जिससे नसों के स्थायी नुकसान से बचा जा सके।



चुकंदर और खट्टे फलों का रस: एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर एक पौष्टिक पेय

1. नाइट्रेट्स से भरपूर, नाइट्रिक ऑक्साइड में परिवर्तित, जो स्वस्थ रक्तचाप को बनाए रखता है।

2. फ्लेवेट, मैंगनीज और बेटालेन (एंटीऑक्सीडेंट और सूजनरोधी गुणों वाले) से भरपूर

3. एथलेटिक प्रदर्शन और रक्त प्रवाह में सुधार हो सकता है

नोट: इससे लाल मूत्र हो सकता है (हानिरहित - जिसे बीटूरिया कहा जाता है)

2. गाजर

1. बीटा-कैरोटीन (विटामिन ए का अग्रदूत) का उत्कृष्ट स्रोत - वृद्धि और प्रतिरक्षा के लिए बढ़िया इसमें फाइबर और ल्यूटिन और जैक्सैथिन जैसे एंटीऑक्सीडेंट होते हैं

2. त्वचा के स्वास्थ्य और आंखों के कार्य में सहायता करता है

3. प्रति कैलोरी सबसे अधिक पोषक तत्वों से भरपूर सब्जियों में से एक।

3. लाल सेब

1. प्राकृतिक मिठास और पैंक्टिन प्रदान करता है, जो एक चुलनशील फाइबर है जो अच्छे आंत बैक्टीरिया को पोषण देता है

2. इसमें क्वेरसेटिन होता है, जो एक एंटीऑक्सीडेंट है जो सूजन को कम करने में मदद करता है

3. नींबू के खट्टेपन और चुकंदर के मिट्टी के स्वाद को संतुलित करने में मदद करता है

4. इस जूस को सुरक्षित और स्मार्ट तरीके से कैसे बनाएं



- सामग्री (1-2 लोगों के लिए)
- 1 छोटा पका हुआ या कच्चा चुकंदर (छिला हुआ)
- 1 बड़ा गाजर (धोया हुआ, कटा हुआ)
- 1/2 लाल सेब (बीज निकाला हुआ)
- 1/2 नींबू (छिला हुआ)
- वैकल्पिक: अतिरिक्त ताज़गी के लिए अदरक या खीरे का छोटा टुकड़ा

निर्देश

- सभी सामग्री को छोटे टुकड़ों में काट लें।
- जूसर के माध्यम से इसे डालें, या मिश्रण करें और छान लें।
- बर्फ के ऊपर ठंडा करके परोसें।
- तुरंत पी लें - ताज़ा जूस जल्दी ऑक्सीकृत हो जाता है।

टिप: एक छोटे गिलास से शुरूआत करें - चुकंदर संवेदनशील व्यक्तियों में पाचन क्रिया को प्रभावित कर सकता है।

इस जूस के वास्तविक लाभ (बिना किसी प्रचार के)

- हाइड्रेशन
- तरल पदार्थ से भरपूर पेय दैनिक पानी की जरूरतों को पूरा करने में मदद करता है
- एंटीऑक्सीडेंट समर्थन
- बेटालेन, विटामिन सी और कैरोटीनॉयड ऑक्सीडेंटिव तनाव से लड़ते हैं

हृदय स्वास्थ्य

- चुकंदर में मौजूद नाइट्रेट रक्तचाप कम

“युवावस्था सब कुछ उलट सकती है। लेकिन 40 के बाद, शरीर गलतियों को माफ करना बंद कर देता है।

हां सबसे शक्तिशाली, सरल, विज्ञान-समर्थित व्याख्या दी गई है, जो युवाओं को यह समझाने में मदद करेगी कि लिपिड संबंधी समस्याएं और हृदय रोग वास्तव में कैसे शुरू होते हैं - और कैसे 18-30 वर्ष की आयु में छोटी-छोटी गलतियां 40-60 वर्ष की आयु में बड़ी आपदाओं में बदल जाती हैं।*

मैं इसे कहानी की तरह व्यावहारिक तरीके से समझाऊंगा जिससे कोई भी युवा जुड़ सकेगा। लिपिड प्रोफाइल का पहला चेकअप और जहां हृदय रोग वास्तव में शुरू होता है* सबसे पहले जो चीज गलत होती है वह कोलेस्ट्रॉल नहीं है।

पहला चेकअप/डॉक्टर जो विफल होता है वह है आपका मेटाबोलिज्म (इंसुलिन + लिपिड + सूजन)। यह किशोरावस्था और 20 के दशक के आरम्भ में एलडीएल बढ़ने से बहुत पहले ही चुपचाप शुरू हो जाता है।

जब चयापचय कमजोर होता है, तो प्रयोगशाला में सबसे पहला परिवर्तन यह देखा जाता है: 1 कम एचडीएल + उच्च ट्राइग्लिसराइड्स यह संयोजन = चयापचय चेतना नंबर 1 युवा इसे अनदेखा करते हैं, और यह भविष्य में हृदय रोग का बीज बन जाता है।

युवाओं में हृदय रोग कैसे शुरू होता है (आयु 18-30) हृदय रोग अज्ञानक नहीं होता। यह 20-30 साल की छोटी-छोटी गलतियों का परिणाम है। आइये इन्हें समझें:

1 गलती: "मैं जवान हूँ, इसलिए मैं कुछ भी खा सकता हूँ।"

18-30 की उम्र में आपका चयापचय मजबूत होता है। तुम खाते हो: फास्ट फूड कोला पिज्जा शक्कर वाली कॉफी चिप्स देर रात का भोजन लेकिन अंदर, चुपचाप:

लिपिड फैटी हो जाता है इंसुलिन प्रतिरोधी हो जाता है एचडीएल गिरता है ट्राइग्लिसराइड्स में वृद्धि सूजन शुरू होती है

यह हृदय रोग का वास्तविक प्रारंभिक बिंदु है। 2 गलती: दिन में 8-10 घंटे बैठे रहना छात्र + नई नौकरी = कोई बदलाव नहीं।

परिणाम: मांसपेशियाँ वसा जलाना बंद कर देती हैं चीनी का स्तर ऊंचा रहता है ट्राइग्लिसराइड्स बढ़ने लगते हैं

धमनियाँ धीरे-धीरे सख्त हो जाती हैं यह शारीरिक निष्क्रियता सबसे पहले धमनी क्षति का कारण बनती है।

3 गलती: नींद न आना, देर रात तक जागना, तनाव युवा सोचते हैं कि वे मजबूत हैं। लेकिन शरीर सत्य जानता है। खराब नींद से बढ़ता है: कोर्टिसोल

सूजन और जलन इंसुलिन प्रतिरोध 2-3 वर्षों के भीतर, ट्राइग्लिसराइड्स बढ़ जाते हैं। यह हृदय स्वास्थ्य का छिपा हुआ प्रारंभिक हथियार है। 4 गलती: चीनी बहुत ज्यादा, वसा नहीं युवा लोग सोचते हैं कि "तेल बुरा है" लेकिन असली दुश्मन है:

रोटी पास्ता बिस्कुट चॉकलेट आइसक्रीम रस शीतल पेय यह सीधे बढ़ता है: ट्राइग्लिसराइड्स लिपिड वसा भविष्य में मधुमेह का खतरा

शुगर टीजी धमनियों को बढ़ाता है, एलडीएल क्षतिग्रस्त हो जाता है और ऑक्सीकरण शुरू हो जाता है। 5 गलती: छोटे चेतनावीन संकेतों को नजरअंदाज करना युवाओं की अनदेखी: कभी-कभी तेज दिल की धड़कन थकान

सांस लेने में कठिनाई भार बढ़ना पेट की चर्बी मूँहासे + तैलीय त्वचा मनोदशा संबंधी समस्याएं चयापचय संबंधी परेशानी के सभी प्रारंभिक लक्षण। जब तक एलडीएल बढ़ता है, तब तक नुकसान शुरू हो चुका होता है।

हृदय रोग का वास्तविक प्रथम जांच बिंदु उच्च टीजी + निम्न एचडीएल कमर का आकार बढ़ना फैटी लिपिड (यहां तक कि हल्का भी) लेकिन शरीर सत्य जानता है। 10 युवावस्था में होने वाले प्रथम ट्रेटमेंट हैं। एलडीएल बहुत बाद में बढ़ता है - आमतौर पर 30 और 40 की उम्र में।

वास्तव में वर्षों बाद रुकावटों का कारण क्या है? तेल खाने से 1-2 साल तक ब्यांकेज नहीं बनते। वे 20 वर्षों के कारण बनते हैं: उच्च ट्राइग्लिसराइड्स कम एचडीएल ऑक्सीडेंटिव तनाव सूजन और जलन उच्च चीनी आहार गतिरहित जीवन अनियमित नींद पेट की चर्बी तनाव हार्मोन

यही कारण है कि एक 40 वर्षीय व्यक्ति को अचानक यह महसूस होता है: इस एक शक्तिशाली पैंक्ति का प्रयोग करें: "45 वर्ष की उम्र में आपका दिल का दौरा 44 वर्ष की उम्र में नहीं बल्कि 20 वर्ष की उम्र में शुरू होता है।"



एआई टीचर्स: शिक्षा की दुनिया में आने वाला है बड़ा मोड़

राजेश जैन

कल्पना कीजिए, एक ऐसा शिक्षक जो कभी थकता नहीं, हर छात्र को उसकी रफ्तार से सिखाता है, हर गलती पर तुरंत फीडबैक देता है और यह सब 24 घंटे करता है। सुनने में यह साइंस फिक्शन की बात लग सकती है, पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) अब इसे हकीकत बना रहा है। पिछले कुछ सालों में एआई ने हेल्थ, फाइनेंस और कम्प्यूटेशन जैसे सेक्टरों को तो बदला ही है, अब यह शिक्षा के मैदान में सबसे बड़ा गेम-चेंजर बनकर उभर रहा है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में, जहां हर बच्चे तक क्वालिटी एजुकेशन पहुंचाना अब भी चुनौती है, एआई शिक्षण और सीखने के तरीकों को जड़ से बदल सकता है। सवाल है—क्या हम इसके लिए तैयार हैं?

परसंलाइड लर्निंग का दौर

परंपरागत क्लासरूम में एक टीचर सौ बच्चों को एक ही तरीके से पढ़ाता है, जबकि हर बच्चे की समझ, गति और रुचि अलग होती है। यही वह खाई है जिसे एआई पाट सकता है। एआई-पावर्ड टीचिंग सिस्टम छात्रों के डेटा का विश्लेषण करके उनके लर्निंग पैटर्न, कमजोरियाँ और ताकत को पहचान सकता है। इसके आधार पर वह कंटेंट एडजस्ट और एक्सप्लेन करता है या तो हर छात्र के

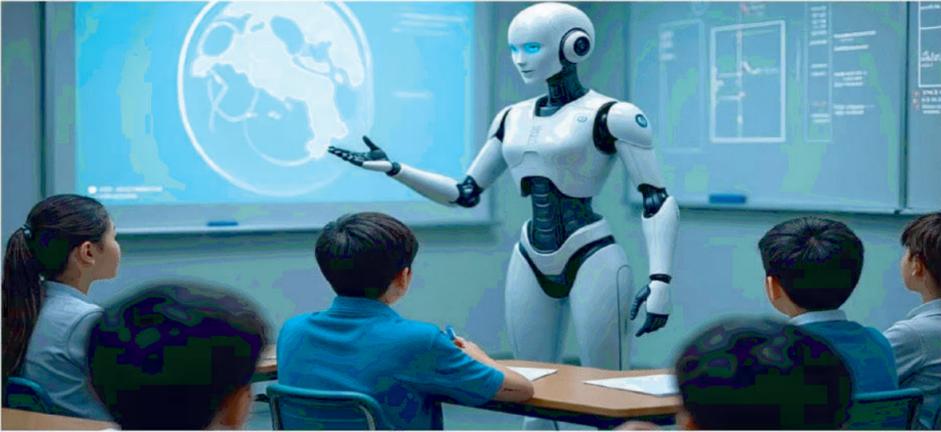
लिए एक 'पर्सनल क्लासरूम' तैयार हो जाता है। मान लीजिए कोई छात्र मैथ में अच्छा है पर फिजिक्स में कमजोर—एआई उसे फिजिक्स में अतिरिक्त प्रैक्टिस, एनिमेशन या गेम-बेस्ड लर्निंग के जरिये समझा सकता है। इससे सीखना मजबूरी नहीं, आनंद बन जाता है।

गांव और शहर की शिक्षा के बीच पुल

भारत में आज भी करोड़ों बच्चे ऐसे हैं जिन्हें अच्छे स्कूल, अनुभवी शिक्षक या अपडेटेड स्टडी मटेरियल नहीं मिल पाते। एआई इस असमानता को काफी हद तक खत्म कर सकता है। एआई-आधारित ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और वचुअल टीचर्स किसी भी बच्चे तक, किसी भी गांव में, एक ही गुणवत्ता वाली शिक्षा पहुंचा सकते हैं। यह तकनीक बहुभाषी भी हो सकती है यानी छात्र अपनी मातृभाषा में सीख सकें। जब राजस्थान, नागालैंड या बिहार का छात्र अपनी भाषा में विज्ञान समझेगा, तो सीखने की दीवारें गिरेंगी और आत्मविश्वास बढ़ेगा।

24 घंटे और सातों दिन उपलब्ध शिक्षक

स्कूल का घंटा बजते ही पारंपरिक टीचर की द्युटी खत्म होती है, लेकिन एआई टीचर कभी छुट्टी नहीं लेता। छात्र जब चाहे- रात में, छुट्टी के दिन या परीक्षा से एक दिन पहले, एआई प्लेटफॉर्म से जुड़कर रिवीजन, प्रैक्टिस टेस्ट या असाइनमेंट में मदद पा सकता है। यह सुविधा खासकर उन छात्रों के लिए वरदान साबित हो सकती है जो किसी कारणवश



नियमित क्लासेज नहीं अटेंड कर पाते या जिन्हें अतिरिक्त सहायता की जरूरत होती है। सीखने की प्रक्रिया अब समय या जगह से बंधकर नहीं रहेगी।

तुरंत फीडबैक, तत्काल सुधार

अक्सर परीक्षा के बाद रिजल्ट आने में दिन या हफ्ते लग जाते हैं। तब तक छात्र की गलती पुरानी पड़ जाती है। एआई इस तरी को खत्म कर देता है।

एआई सिस्टम तुरंत बता देता है कि छात्र ने कहां

गलती की और कैसे उसे सुधार सकता है। इससे सीखने की प्रक्रिया सक्रिय और निरंतर बनती है।

साथ ही, यह सिस्टम छात्रों की प्रगति को ट्रैक करता है, विस्तृत रिपोर्ट तैयार करता है और टीचर्स को बताता है कि कौन-सा बच्चा किस विषयों में पिछड़ रहा है।

शिक्षकों का साथी, प्रतिस्थापन नहीं

कई लोग डरते हैं कि एआई टीचर इंसानों की

जगह ले लेंगे। हकीकत उलटी है—एआई शिक्षक नहीं, सहायक बनेंगे। वे असाइनमेंट जांचने, रिपोर्ट तैयार करने, टाइमटेबल और एडमिनिस्ट्रेटिव काम जैसे समयाच्छा कार्य संभाल सकते हैं। इससे शिक्षक छात्रों के साथ ज्यादा समय बिता पाएंगे, चर्चा, डिबेट और मॉडरशिप पर ध्यान दे पाएंगे। शिक्षक का मानवीय जुड़ाव—जो किसी भी शिक्षा को आत्मा है—एआई से और भी प्रभावी बन सकता है, बशर्ते

क्या एआइ सोख रही है नीले ग्रह का पानी ?

आज एआइ (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) का जमाना है। दुनिया में आज एआइ के प्रति प्यास निरंतर बढ़ती चली जा रही है, क्योंकि आज शिक्षा, स्वास्थ्य (हेल्थकेयर), खेती-किसानी, सुरक्षा, बैंकिंग और वित्त, उधोग और निर्माण (इंटरनेट एंड मैनुफैक्चरिंग), परिवहन, पर और दैनिक जीवन, मनोरंजन के क्षेत्रों में, सरकारी सेवाओं (गवर्नेंस), पर्यावरण संरक्षण में लेकर हर क्षेत्र में एआइ का बोलाबाला हो गया है। मनुष्य धीरे धीरे ही सही एआइ के शिकंजे में फंसाता चला जा रहा है। सच तो यह है कि आज दिमाग से तकनीक की दोस्ती लगातार बढ़ रही है। कहा गया है कि विज्ञान वरदान है तो अधिशाषण भी है, इसलिए एआइ का उपयोग भी, मानव को विवेकपूर्ण तरीके/ढंग से करना चाहिए, क्योंकि इसके अनेक लाभ भी हैं तो हानियाँ भी हैं। सबसे बड़ी बात, हमें इस बात का जरा सा भी भान नहीं है कि एआइ हमारे नीले ग्रह का पानी सोख रही है। आज मनुष्य एआइ का आदी होता चला जा रहा है और वह कोई भी प्रश्न तकनीक से यानी कि एआइ की सहायता से पूछने लगा है, लेकिन एआइ से पूछा गया एक-एक सवाल लीटरों पानी की खपत कर रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो एआइ के कारण आज पानी का फुटप्रिंट या यूँ कहें कि पानी का इस्तेमाल विस्फोटक ढंग से बढ़ता चला जा रहा है। पाठकों को जानकारी प्राप्त करके हैरानी होगी कि दुनिया भर के डेटा सेंटर हर साल अरबों लीटर पानी कूलिंग सिस्टम में सोख लेते हैं, और 2022-23 के बीच एआई हॉटों की जल-खपत में 30-40% की तेज बढ़ोतरी दर्ज की गई। भारत में भी उन डेटा सेंटरों के कारण जल-उपयोग मेगालिटर स्तर तक बढ़ने लगा है। यदि एआई का ऐसे ही अंधाधुंध विस्तार होता रहा, तो यह भूजल स्तर को खतरनाक रूप से गिरा सकता है। इसलिए 'सस्टेनेबल एआइ' की तकनीकों, ऊर्जा-कुशल मॉडल तथा जिम्मेदार उपयोग की ओर तत्काल कदम बढ़ाना ही धरती को जल-संकट से बचाने का एकमात्र रास्ता है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताया चल्कि एआइ और पानी का फुटप्रिंट का आपस में संबंध है। दरअसल, आज के समय में एआइ के बढ़ते उपयोग के साथ पानी की खपत एक कम चर्चा किया गया, लेकिन बेहद महत्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दा बनकर उभर रहा है। गौरतलब है कि आधुनिक एआइ मॉडल-खासकर बड़े लैंग्वेज मॉडल (एलएलएमएज) को ट्रेन करने और चलाने में भारी ऊर्जा के साथ-साथ काफी पानी भी

लगता है। अब यहाँ प्रश्न यह उठता है कि आखिर एआइ को पानी क्यों चाहिए ? तो इसका सीधा सा उत्तर यह है कि एआइ मॉडल्स की ट्रेनिंग और इंफरेंस (रनिंग) शक्तिशाली डेटा सेंटरों में होता है। यह डेटा सेंटर 24x7 कंयूटिंग के कारण बहुत गर्म हो जाते हैं, इसलिए इन्हें ठंडा करने के लिए बड़ी मात्रा में पानी का उपयोग किया जाता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार पानी दो तरह से लगता है। मसलन, एक तो कूलिंग के लिए सीधे पानी का उपयोग किया जाता है। दरअसल, कूलिंग टावरों में पानी वाष्पीकृत किया जाता है ताकि सर्वर ठंडे रह सकें। दूसरा यह कि विद्युत उत्पादन में भी अप्रत्यक्ष रूप से पानी का उपयोग होता है। दरअसल, बिजली उत्पादन-कोयला/थर्मल/न्यूक्लियर भी काफी पानी खर्च करता है। न केवल पानी बल्कि एआइ-डेटा सेंटरों की वजह से ऊर्जा की खपत भी बहुत तेजी से बढ़ रही है। उदाहरण के लिए, एकरिपोर्ट के मुताबिक 2023 में डेटा सेंटरों की बिजली खपत लगभग 487 टीडब्ल्यूएच (टेरावॉट-घंटा) थी और एई-विशिष्ट (एआइ) वर्कलोड के कारण यह खपत 50 टेरावॉट घंटा के आसपास थी और 2030 तक यह 554 टेरावॉट घंटा तक पहुंचने का अनुमान है। यहां पाठकों को बताया चल्कि कि टेरावॉट घंटा ऊर्जा की एक बड़ी इकाई है, जिसका उपयोग बहुत बड़े पैमाने पर बिजली खपत या उत्पादन बनाने के लिए किया जाता है। सरल शब्दों में कहें तो एक टेरावॉट घंटा से तात्पर्य एक अरब किलोवाट-घंटे से होता है। बहरहाल, पानी की खपत का बात करें तो, 2023 में डेटा सेंटरों ने लगभग 175 बिलियन लीटर पानी का उपयोग किया, और 2030 तक यह अनुमान 664 बिलियन लीटर तक पहुंचने का है। मोर्गन स्टेनले की एकरिपोर्ट के अनुसार, 2028 तक एआइ-डेटा सेंटरों की पानी की खपत (कूलिंग + बिजली उत्पादन) 1,068 बिलियन लीटर पहुंच सकती है, जो 2024 के स्तर से लगभग 11 गुना अधिक है। वहीं दूसरी ओर यदि हम ऊर्जा की खपत की ओर देखें तो, आज के एआइ वर्कलोडों में काफी तेजी से वृद्धि हो रही है। दरअसल, बड़े मॉडल-ट्रेनिंग से लेकर रोजगारों के इनफरेंस (प्रॉफिट) वर्कलोड तक, दोनों ही ऊर्जा माँग को बढ़ा रहे हैं। आज भारत जैसे विकासशील देश में एआइ-डेटा सेंटरों की तेजी से वृद्धि हो रही है, जिसके कारण ऊर्जा और पानी पर दबाव बढ़ रहा है। एकरिपोर्ट के अनुसार, भारत में एआइ-डेटा सेंटरों की बिजली की माँग 2030 तक लगभग 50 टीडब्ल्यूएच प्रति वर्ष तक पहुंच सकती



है। पानी की खपत को लेकर एक्वाटिया नाम की ब्लॉग रिपोर्ट कहती है कि भारत का डेटा सेंटर पानी उपयोग 2025 में लगभग 150.30 बिलियन लीटर था, जो 2029 तक बढ़कर 358.66 बिलियन लीटर तक पहुँच सकता है। इसके अलावा, बिजनेस स्टैंडर्ड में एक लेख में बताया गया है कि भारत में डेटा सेंटर क्षमता बहुत तेजी से बढ़ रही है (2027 तक 1.8 गीगावाट तक पहुँचने का अनुमान), और इससे ऊर्जा-पानी दोनों संसाधनों पर दबाव बढ़ सकता है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूँगा कि 1 गीगावाट 1,000 मेगावाट और 1 मेगावाट 1,000 किलोवाट के बराबर होता है। इसलिए 1.8 जीडब्ल्यू का मतलब 1,800 मेगावाट या 18,00,000 किलोवाट हुआ, जो बहुत बड़ी मात्रा की बिजली है, जितनी ऊर्जा बड़े बिजली संयंत्र या पूरे शहर की बड़ी आबादी चला सकती है। बहरहाल, एक अन्य उपलब्ध जानकारी के अनुसार एआइ-वर्कलोड की वजह से डेटा सेंटरों की ऊर्जा खपत पिछले कुछ सालों में लगभग 20% प्रतिवर्ष बढ़ी है। तक्षशिला इंस्टीट्यूट की एकरिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में डेटा सेंटरों में उठा करने (कूलिंग) के लिए पानी की खपत, भारतीय जलवायु की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लगभग 25.5 मिलियन लीटर प्रति मेगावॉट (एमडब्ल्यू) प्रति वर्ष हो सकती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कई डेटा सेंटर ऑपरेटर ऊर्जा और पानी की खपत के संदर्भ में अपने आंकड़े भी पूरी तरह स्पष्ट नहीं दे रहे हैं। बहरहाल, आज हमारे देश में डेटा सेंटर की कुल क्षमता बहुत तेजी से बढ़ रही है। टीबीएस (द बिजनेस स्टैंडर्ड) की एकरिपोर्ट कहती है कि 2027 तक भारत की डेटा सेंटर क्षमता 1.8 जीडब्ल्यू तक पहुँच सकती है, जिससे बिजली की माँग बहुत बढ़ेगी। आज बहुत सी डेटा केंद्रों में हैं, जो अपने

सटीक 'डेटा-सेंटर-स्तर' ऊर्जा खपत और जल उपयोग को एएसजी (एनवायरमेंटल, सोशल एंड गवर्नेंस) रिपोर्ट में खुलकर नहीं दिखाती। दरअसल, इस मुद्दे पर पारदर्शिता में कमी है। हाल फिलहाल, कहना गलत नहीं होगा कि भारत में एआइ के बढ़ते इस्तेमाल से बिजली और पानी की खपत तेजी से बढ़ रही है। एआइ चलाने वाले डेटा सेंटर और क्लाउड सर्वर बहुत अधिक बिजली खपत करते हैं, क्योंकि दिन-रात हजारों कंप्यूटर चलते रहते हैं। बड़े एआइ मॉडल को ट्रेन करने में हजारों घंटों जितनी बिजली लागू सकती है। दरअसल, सर्वरों को ठंडा रखने के लिए बहुत पानी चाहिए, इसलिए पानी की खपत भी बढ़ रही है। एक कंप्यूटर यूनिट को चलाने में सैकड़ों लीटर पानी खर्च हो सकता है। चूँकि, भारत में डिजिटल सेवाएँ, एआइ कंपनियाँ और क्लाउड सिस्टम तेजी से बढ़ रहे हैं, इसलिए ऊर्जा और पानी की यह माँग आगे और भी बढ़ेगी। नवी वजह से अब सौर ऊर्जा, हरित बिजली और पानी-कुशल डेटा सेंटर की जरूरत पहले से कहीं ज्यादा हो गई है। अंत में यही कहूँगा कि एआइ मॉडलों का पानी-फुटप्रिंट तेजी से बढ़ती डिजिटल दुनिया की एक गंभीर पर्यावरणीय चुनौती बनता जा रहा है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि बड़े एआइ मॉडल-जैसे जीपीटी-4 आकार के मॉडल को ट्रेन करने में कई लाख लीटर पानी खर्च हो सकता है, जबकि चैटजीपीटी जैसे मॉडलों से 20-50 सवाल पूछने में उतना पानी लग जाता है, जितना एक कप चाय बनाने में लगता है। जानकारी के अनुसार यह खपत डेटा सेंटर की लोकेशन, मौसम और कूलिंग तकनीक पर निर्भर करती है। एआइ उपयोग बढ़ने का सीधा असर पानी की माँग पर पड़ता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ पहले से जल-संकट है। डेटा सेंटर, ऊर्जा उपयोग और पानी की खपत मिलकर एक त्रिकोणीय दबाव बनाते हैं, जिससे टेक कंपनियों के लिए पर्यावरणीय निगरानी और भी जरूरी हो जाती है। इस चुनौती को देखते हुए गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियाँ 'वाटर पाजिटीव' बनने का लक्ष्य लेकर चल रही हैं और एयर-कूलिंग, इवर्पॉइंट कूलिंग व रीसाइकलड पानी जैसे समाधान अपना रही हैं। जैसा कि ऊपर भी बता चुका हूँ कि भारत में भी एआइ और डेटा सेंटरों का विस्तार तेजी से हो रहा है, लेकिन कई राज्यों में पहले से पानी की कमी होने के कारण स्थिति और चुनौतीपूर्ण हो सकती है। इसलिए भविष्य में ऊर्जा-कुशल एआइ मॉडल, नवीकरणीय ऊर्जा आधारित डेटा सेंटर, पारदर्शी पानी

तकनीक को प्रतिस्पर्धी नहीं, सहयोगी मानें।

सस्ती और सुलभ शिक्षा का रास्ता

क्वालिटी एजुकेशन महंगी मानी जाती है। पर एआइ इस मिथक को तोड़ सकता है। एक बार टेक्नोलॉजी तैयार हो जाने के बाद, एआइ प्लेटफॉर्म लाखों छात्रों को एक साथ पढ़ा सकता है—बिना अतिरिक्त खर्च के। स्कूलों को अतिरिक्त स्टाफ या इंफ्रास्ट्रक्चर पर भारी खर्च नहीं करना पड़ेगा। इससे शिक्षा संस्थानों की लागत घटेगी और छात्रों को किफायती दरों पर बेहतर शिक्षा मिलेगी। सरकारी स्कूलों और अंडरफंडेड कॉलेजों के लिए यह विशेष रूप से उपयोगी साबित हो सकता है।

चुनौतियाँ भी कम नहीं

हर तकनीकी क्रांति के साथ कुछ मुश्किलें आती हैं। एआइ आधारित शिक्षा के लिए भारत को मजबूत डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर चाहिए—तेज इंटरनेट, पर्याप्त डिवाइस, और बिजली तक की भरोसेमंद सप्लाई।

दूसरा, शिक्षकों और छात्रों दोनों को एआइ टूल का इस्तेमाल सिखाना होगा। अगर टेक्नोलॉजी "यूजर-फ्रेंडली" नहीं हुई तो यह असमानता और बढ़ा सकती है।

सबसे जरूरी बात एआइ मानव संवेदनाओं की जगह नहीं ले सकता। शिक्षा सिर्फ जानकारी नहीं, मूल्य और सहानुभूति भी सिखाती है। इसलिए एआइ का इस्तेमाल मानव सहयोग के रूप में होना चाहिए, मानव प्रतिस्थापन के रूप में नहीं।

“नवदृष्टि का समय: बदलाव की राह अपने

“समाज बदलने की पहली शर्त

यही है कि हम अपने बच्चों को दुनिया को देखने की नई दृष्टि दें—

दृष्टि जो केवल देखना न सिखाए, बल्कि समझना, परखना और सुधारना भी सिखाए।”

- डॉ प्रियंका सौरभ

समाज परिवर्तन की सबसे महत्वपूर्ण यात्रा हमेशा अपने मूल में उन छोटे-छोटे बीजों से शुरू होती है, जिन्हें हम बच्चे कहते हैं। दुनिया की कोई भी क्रांति—विचारों की हो, नैतिकता की हो, तकनीक की हो या इंसानी मूल्यों की—तब तक स्थायी नहीं हो सकती जब तक वह अगली पीढ़ियों के जीवन-दर्शन में अपनी जड़ें न जमा ले। यही कारण है कि बुद्ध, विवेकानंद, गांधी, टैगोर, नेल्सन मंडेला जैसे विचारकों ने मानव सभ्यता में किसी स्थायी परिवर्तन के लिए शिक्षा, संस्कार और बाल मानस की संवर्धन को सबसे महत्वपूर्ण आधार माना। आज जब समाज अनेक स्तरों पर मूल्य-संकट, अस्थिरता, उपभोक्तावाद, कट्टरता और सामाजिक विघटन की चुनौतियों से गुजर रहा है, तब यह प्रश्न और भी तोखा हो उठता है—क्या हम अपने बच्चों को वह दृष्टि दे पा रहे हैं, जिसके आधार पर वे वर्तमान से बेहतर भविष्य बना सकें ?

बच्चों के भीतर समाज को देखने का दृष्टिकोण केवल पारंपरिक संकेतों से नहीं बनता, बल्कि परिवार, मातृव्य, विचारों, संवाद, उदाहरणों और सबसे अधिक—व्यस्कों के व्यवहार से बनता है। बच्चा, दरअसल, समाज का सबसे संवेदनशील प्रतिफल होता है। जिस प्रकार की भाषा, सोच, संर-अस्तित्व, सामाजिक व्यवहार, संवेदनशीलता और दृष्टि वह अपने आस-पास देखता है, वही धीरे-धीरे उसके भीतर किसी अनन्यव्यक्ति कितना तरोतह

अंकित हो जाती है। यही कारण है कि यदि हम समाज को बदलना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें अपने व्यवहार, अपने पारिवारिक वातावरण और अपने सामाजिक आचरण को बदलना होगा—क्योंकि बच्चा वही बनता है, जो वह देखता है, वही नहीं बनता, जिसे वह सुनता है।

आज के समय में बच्चों के सामने समाज को समझने के दो बड़े स्रोत मौजूद हैं—एक परिवार, दूसरा डिजिटल दुनिया। दुर्भाग्य यह है कि दोनों में से किसी में भी वह स्पष्ट और संतुलित दृष्टि नहीं मिल पाती, जिसकी उसे आवश्यकता है। परिवारों में संवाद कम हो गया है, समय घट गया है और साथ बैठने की संस्कृति लागभग लुप्त होती जा रही है। वहीं डिजिटल दुनिया बच्चों को सूचना का असंमित सागर तो देती है, परंतु विवेक और दिशा का दीपक नहीं देती। ऐसे में बच्चे जानकारी तो बहुत पा लेते हैं, परंतु समझ की कमी के कारण वह जानकारी उनके भीतर भ्रम, असुरक्षा और अव्यवस्थित दृष्टिकोण पैदा कर देती है।

इसीलिए यह आवश्यक है कि हम बच्चों को समाज को देखने के लिए ऐसी दृष्टि दें जो संवेदनशील हो, विवेकपूर्ण हो, वैज्ञानिक हो, नैतिक हो और सबसे अधिक—मानवतावादी हो। बच्चा यदि सीख जाए कि समाज केवल धोड़ नहीं है, बल्कि व्यक्तियों का एक जीवंत तानाबाना है; कि हर व्यक्ति की अपनी संघर्ष-कथा है; कि हर निर्णय का कोई संदर्भ होता है; और कि सहानुभूति किसी भी सभ्यता का सबसे बड़ा आधार है—तो वह न केवल एक बेहतर नागरिक बनेगा, बल्कि समाज को भी बेहतर दिशा देगा।

समाज परिवर्तन का यह बीज तभी पनप सकता है जब हम अपने बच्चों को प्रश्न पूछना सिखाएँ। भारत सहित दुनिया के अनेक देशों में बच्चों को प्रश्न पूछने से अधिक उत्तर रटने की आदत डाली जाती है। बच्चा बच्चा जान, सच्चा ज्ञान ही है, कि हर व्यक्ति की अपनी संघर्ष-कथा है; कि हर निर्णय का कोई संदर्भ होता है; और कि सहानुभूति किसी भी सभ्यता का सबसे बड़ा आधार है—तो वह न केवल एक बेहतर नागरिक बनेगा, बल्कि समाज को भी बेहतर दिशा देगा।

सकता है, और गलतियों से सीख सकता है—तो उसके भीतर रचनात्मकता और मौलिकता विकसित होती है। यही रचनात्मकता समाज को आगे ले जाती है।

समाज को देखने का नया दृष्टिकोण बच्चों को तो भी मिलेगा जब हम उन्हें विविधता को स्वीकार करना सिखाएँ। आज के समय में विभाजन, ध्रुवीकरण और एकांगी सोच के कारण समाज के भीतर खाईयाँ बढ़ रही हैं। बच्चे स्कूलों में साथ पढ़ते हैं, खेलते-कूदते हैं, लेकिन बड़े होने पर अक्सर उन दीवारों को अपना लेते हैं जो समाज ने खड़ी की होती हैं। इसलिए यह बेहद महत्वपूर्ण है कि हम बच्चों को यह समझाएँ कि विविधता समाज की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी सबसे बड़ी ताकत है। यदि वह यह समझ जाए कि हर संस्कृति, हर भाषा, हर परंपरा, हर विचार और हर व्यक्ति समाज की सामूहिक पहचान का हिस्सा है—तो वह न केवल एक बेहतर नागरिक बनेगा, बल्कि वह उन दीवारों को भी तोड़ पाएगा जो नफरत और संकीर्णता खड़ी करती हैं।

समाज बदलने की इस प्रक्रिया में शिक्षा प्रणाली की भूमिका निर्णायक है। शिक्षा केवल परीक्षा पास कराने का साधन नहीं हो सकती; वह बच्चों को जीवन और समाज को समझने की कला भी सिखाए। उन्हें यह बताया जाए कि सफलता केवल अंकों से नहीं, बल्कि इंसानियत, सत्यनिष्ठा, सहयोग, साहस और संवेदनशीलता से भी मापी जाती है। यह भी समझाया जाए कि समाज केवल लिए जाने की चीज नहीं, बल्कि कुछ देने की जिम्मेदारी भी है। जब बच्चा अपने जीवन में 'कर्तव्य' का भाव समझता है, तभी वह समाज के लिए कुछ करने का संकल्प लेता है।

बच्चों को नई दृष्टि देने के लिए पहला कदम सिखाएँ। भारत सहित दुनिया के अनेक देशों में बच्चों को प्रश्न पूछने से अधिक उत्तर रटने की आदत डाली जाती है। बच्चा बच्चा जान, सच्चा ज्ञान ही है, कि हर व्यक्ति की अपनी संघर्ष-कथा है; कि हर निर्णय का कोई संदर्भ होता है; और कि सहानुभूति किसी भी सभ्यता का सबसे बड़ा आधार है—तो वह न केवल एक बेहतर नागरिक बनेगा, बल्कि समाज को भी बेहतर दिशा देगा।

समाप्त करना और कानून का सम्मान करना। जब बच्चा यह सब अपने घर और समाज में जीवन रूप में देखता है, तब उसमें भी वैसे ही चरित्र-विकास होता है।

बच्चों में यह दृष्टि विकसित करने के लिए सबसे आवश्यक है—उन्हें स्वयं सोचने देना, स्वयं अनुभव करने देना, स्वयं सीखने देना। बच्चों पर अपनी सोच थोप देना समाज परिवर्तन का मार्ग नहीं, बल्कि समाज को जड़ता में बाध्य करने का तरीका है। यदि बच्चा स्वयं यह अनुभव करे कि समाज में समस्याएँ हैं और उन्हें बदलना संभव है, तो उसके भीतर यथार्थ की समझ और परिवर्तन का साहस जन्म लेता है।

बच्चों को नया दृष्टिकोण देना मतलब यह नहीं कि हम उन्हें आदर्शवादी कल्पनाओं में जोने दें। बल्कि उन्हें यह समझाना है कि समाज जटिल है, समस्याएँ वास्तविक हैं, लेकिन समाधान भी संभव हैं। उन्हें चुनौतियाँ देनी होंगी, परंतु उनके लिए बेहतर समाधान होंगे। बच्चा अपने जीवन में 'कर्तव्य' का भाव समझता है, तभी वह समाज के लिए कुछ करने का संकल्प लेता है।

यदि हम अपने बच्चों को प्रश्न पूछना सिखाएँ, तो समाज को बदलने की राह अपने बच्चों को समाज को देखने का नया दृष्टिकोण प्रदान करना होगा। यह दृष्टिकोण न केवल उनके भविष्य को उजाला देगा, बल्कि हमारे समाज की सामूहिक चेतना को भी नए क्षितिजों तक ले जाएगा। क्योंकि बच्चा केवल परिवार की आशा या राष्ट्र का भविष्य ही नहीं होता—वह वह दीपक है, जिसकी रोशनी से आने वाले समय का मार्ग प्रकाशित होता है।

जिला कलेक्टरों और सुरक्षा अधिकारियों का संयुक्त सम्मेलन 2025

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओइशी

भुवनेश्वर : राज्य को लंबे समय

से भूमि अधिग्रहण संबंधी मुद्दों के कारण राजस्व की हानि हो रही है। राज्य सरकार उद्योग को प्रार्थमिकता दे रही है, लेकिन इसके लिए आवश्यक भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में देरी हो रही है।

बहुत सी सरकारी भूमि अभी भी अतिक्रमण की चपेट में है। इस संबंध में, राज्य सरकार भूमि अधिग्रहण से संबंधित सभी मुद्दों को हल करने, अतिक्रमण को सरकार के अधीन लाने, भूमिहीनता को आवास प्रदान करने और आम लोगों को त्वरित न्याय प्रदान करने के लिए एक व्यापक रोडमैप के माध्यम से कानून में व्यापक संशोधन लागू, राज्य के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री श्री सुरेश पुजारी ने कहा।

यह बात मंत्री श्री पुजारी ने आज लोक सेवा भवन स्थित कन्वेंशन सेंटर में आयोजित मित्रा मजिस्ट्रेटों और सुरक्षा अधिकारियों के दो दिवसीय संयुक्त सम्मेलन के पहले दिन के बाद कही।

सम्मेलन के इस सत्र में राजस्व प्रशासन को सुव्यवस्थित करने, राजस्व अभिलेखों के आधुनिकीकरण और भूमि अधिग्रहण से जुड़ी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

चर्चा में, मंत्री श्री पुजारी ने कहा कि राज्य में कार्यभार संभालने में कई नई सरकार ने भूमि कानून में कई सुधार किए हैं। भूमिस्वामित्व संशोधन प्रक्रिया को सरल बनाया गया है। राज्य सरकार ने विभिन्न बड़े पैमाने पर औद्योगिक परियोजनाओं को स्थाना की योजना बनाई है और इसके लिए भूमि बैंक के माध्यम से आवश्यक भूमि उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है। इसके लिए, जबन अधिग्रहित की गई

सभी सरकारी भूमि को खाली कराया जाएगा। मंत्री ने विभिन्न परियोजनाओं के कार्यान्वयन के दौरान भूमि अधिग्रहण से प्रभावित लोगों को तत्काल मुआवजा प्रदान करने पर जोर दिया।

मंत्री ने जिलों को राज्य के विकास के लिए उन्हें प्रदान की गई भनराशिका उचित और समय पर उपयोग करने के निर्देश दिए। मंत्री ने जिलों से बहुउद्देशीय आश्रयों और न्यूनतम सुविधाओं के रखरखाव के लिए प्रदान की गई आपदा प्रबंधन निधि का उपयोग करने को कहा। इसके साथ ही, मंत्री ने राज्य में 100 और बहुउद्देशीय बाढ़-तुफान आश्रयों के निर्माण की जानकारी दी।

राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री देवेंद्र कुमार सिंह भी सम्मेलन में शामिल हुए और उन्होंने कहा कि राज्य सरकार राज्य में एक सुदृढ़ और कुशल राजस्व प्रशासन के लिए सभी आवश्यक कदम उठा रही है। राजस्व प्रणाली के आधुनिकीकरण के फलस्वरूप, लंबे समय से लंबित 90 प्रतिशत से अधिक राजस्व मामलों का निपटारा हो चुका है। उन्होंने कहा कि औद्योगिक परियोजनाओं में तेजी लाने, व्यापार-अनुकूल वातावरण बनाने, राज्य में बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में तेजी लाने, लोगों को उनके वाजिब अधिकार दिलाने और विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए राजस्व प्रशासन को सुदृढ़ बनाने और राज्य कानूनों में सुधार की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि लंबे समय से लंबित भूमि अभिलेख बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सुरक्षा अधिकारियों को प्रकृति विज्ञान के जिला कलेक्टर श्री विभूति भूषण नायक ने भाग लिया और अपने-अपने जिलों में राजस्व प्रशासन, राजस्व अभिलेखों के आधुनिकीकरण और भूमि अधिग्रहण की समस्याओं और समाधानों पर अपने विचार प्रस्तुत किए और राज्य सरकार को आवश्यक संशोधनों का प्रस्ताव दिया।

मंत्री श्री पुजारी ने सभी जिला कलेक्टरों को नवंबर के अंत तक भूमि अधिग्रहण से संबंधित अपने प्रस्ताव प्रस्तुत करने की सलाह दी है। इसी प्रकार, मंत्री ने जिला कलेक्टरों को फरवरी माह तक राजस्व अधिनियम में आवश्यक संशोधनों से संबंधित अपने प्रस्ताव राजस्व विभाग को प्रस्तुत करने का निर्देश और सलाह दी है।

अंतरिक्ष में उम्मीदों की नई उड़ान



विजय गर्ग

अंतरिक्ष क्षेत्र में बढ़त की बात आती है, तो मामला वजनदार उपग्रहों और ताकतवर राकेटों पर आकर टिक जाता है भविष्य की अंतरिक्षीय होड़ वजनदार उपग्रहों को ले जाने, अंतरिक्ष स्टेशनों के निर्माण तथा चंद्रमा और मंगल पर मिशन भेजने की क्षमता को लेकर है। इस मामले में अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा दिनोंदिन तेज हो रही है। तथ्यों में देखें, तो अमेरिका में सरकारी एजेंसी नासा और निजी एजेंसी स्पेसएक्स, रूस की रासकासमास, चीन की सीएनएसए और यूरोप की ईएसए एजेंसियों से भारत का इसरो प्रतिस्पर्धा में है। अमेरिका की स्पेसएक्स दुनिया का अब तक का सबसे ताकतवर राकेट फाल्कन हैवी और स्टारशिप विकसित कर रही है, जो सौ टन से ज्यादा पेलोड (वजन) ले जाने में सक्षम होगा।



विजय गर्ग

भारत अब एक नई उड़ान पर है। यह उड़ान अंतरिक्ष के जरिए देश की सुरक्षा और जनता के सतत विकास के लक्ष्यों को साधने वाली है। इन सपनों को साकार करने में अहम भूमिका भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के ताकतवर राकेटों और उपग्रहों की है, जो सफलता के नए कीर्तिमान रचते हुए अपनी क्षमता और योग्यता साबित कर रहे हैं। इसमें सबसे ताजा उपलब्धि बीते दो नवंबर की है, जब इसरो ने अपने सबसे ताकतवर राकेट (एलवीएम3 - एम5) से देश का अब तक का सबसे वजनहीन उपग्रह जीसैट-7 आर प्रक्षेपित किया। सामरिक और भारतीय नौसेना की संचालन जरूरतों को साधने के लिए विकसित यह उपग्रह आत्मनिर्भरता के साथ-साथ दुनिया के अंतरिक्ष बाजार में भारत की बढ़ती साख की मिसाल है। अंतरिक्ष क्षेत्र में बढ़त की बात आती है, तो मामला वजनदार उपग्रहों और ताकतवर राकेटों पर आकर टिक जाता है भविष्य की अंतरिक्षीय होड़ वजनदार उपग्रहों को ले जाने, अंतरिक्ष स्टेशनों के निर्माण तथा चंद्रमा और मंगल पर मिशन भेजने की क्षमता को लेकर है। इस मामले में अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा दिनोंदिन तेज हो रही है। तथ्यों में देखें, तो अमेरिका में सरकारी एजेंसी नासा और निजी एजेंसी स्पेसएक्स, रूस की रासकासमास, चीन की सीएनएसए और यूरोप की ईएसए एजेंसियों से भारत का इसरो प्रतिस्पर्धा में है। अमेरिका की स्पेसएक्स दुनिया का अब तक का सबसे ताकतवर राकेट फाल्कन हैवी और स्टारशिप विकसित कर रही है, जो सौ टन से ज्यादा पेलोड (वजन) ले जाने में सक्षम होगा। चीन भी अपने भारी राकेट लांग मार्च5बी और भविष्य के लिए लांग मार्च 9 जैसे सुपर-राकेटों का निर्माण कार्य जारी रखे हुए है। इस किस्म के ताकतवर राकेटों में रूस के प्रोटोन और विकसित किए जा रहे राकेट एंगारा का नाम भी शामिल है। ऐसे में साढ़े चार टन वजन वाले संचार उपग्रह जीसैट-7 आर (सीएमएस03) के सफल प्रक्षेपण ने भारत और इसरो को वह आत्मबल दिया है, जो देश को सामरिक, वैज्ञानिक और वाणिज्यिक मिशनों में अग्रणी पंक्ति में शामिल कराने के लिए जरूरी है। उल्लेखनीय है कि जीसैट-7 आर अब तक का भारत का सबसे भारी संचार उपग्रह है। कई अत्याधुनिक स्वदेशी तकनीकी घटकों वाला यह उपग्रह विशेष रूप से भारतीय नौसेना की संचालन और सामरिक आवश्यकताओं को पूरा

करने के लिए विकसित किया गया है। भारी उपग्रहों को प्रक्षेपित करने में सक्षम होना इस बात का संकेत है कि अंतरिक्ष शक्ति के मामले में भारत अब वह दक्षता हासिल कर चुका है, जिसके लिए कभी रूस या अमेरिका को अंतरिक्ष एजेंसियों से बाहर कोई विकल्प मौजूद नहीं था। जहां तक जीसैट-7 आर की क्षमताओं की है, तो इसे भारतीय नौसेना का अब तक का सबसे आधुनिक संचार मंच कहा जा सकता है। इससे नौसेना की अंतरिक्ष-आधारित संचार प्रणाली और समुद्री क्षेत्र की निगरानी क्षमता में कई गुना इजाफा होगा। यह उपग्रह हिंद महासागर क्षेत्र व्यापक और बेहतर दूरसंचार सेवा प्रदान करेगा। इसमें ध्वनि, डेटा और वीडियो लिंक को तेजी से ग्रहण एवं संप्रेषित करने वाले ऐसे आधुनिक उपकरण लगाए गए हैं, जो भारतीय नौसेना के जहाजों, विमानों, पनडुब्बियों और समुद्री संचालन केंद्रों के बीच सुरक्षित, निर्वाह तथा वास्तविक समय में संचार की जरूरतों को पूरा करेंगे। जाहिर है कि यह समुद्र में नौसेना की रणनीतिक क्षमताओं में बढ़ोतरी करने में महत्वपूर्ण सहायक साबित होगा। करीब साढ़े चार टन वजन की उपग्रह को कामयाबी के साथ अंतरिक्ष की कक्षा में भेजने की घटना को भारत के लिए एक अहम पड़ाव के तौर पर देखा जा रहा है। एलवीएम3 एम राकेट को उसकी भार उठाने की क्षमता के कारण 'बाहुबली' भी कहा जाता है। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में इस किस्म के जीएसएलवी प्रक्षेपण वाहन की कामयाबी का स्तर यदि हम नापना चाहें तो इसकी एक कसौटी अमेरिका के शुरुआती चंद्र मिशन हॉगो। करीब 56 साल पहले अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने अपने जिस यान अपोलो-11 से नील आर्मस्ट्रॉंग को चंद्र पर भेजा था, उसका वजन 4,932 किलोग्राम था। यानी यदि किसी देश का राकेट पांच टन तक का वजन अंतरिक्ष में ले जाने की हैसियत रखता है, तभी उसे चंद्रमा पर ईरान भेजने के सपने के बारे में सोचना चाहिए जिस तरह से एलवीएम3 एम5 ने नया करिश्मा दिखाया है, उसका अर्थ यह निकलता है कि इस राकेट से जल्द ही पांच टन तक के उपग्रह को अंतरिक्ष में ले जाया जा सकता है। इससे चंद्रमा पर ईरान भेजने और भारत की दावेदारी पुष्टा होती है। चंद्रयान-4 के प्रक्षेपण में इसी राकेट के इस्तेमाल की योजना है। में बहरहाल, इस प्रक्षेपण के जरिए इसरो ने साबित कर दिया है कि अंतरिक्ष अभियान अब सिर्फ हमारी

जिज्ञासाओं का मामला भर नहीं रह गया है, बल्कि भारत ने एक के बाद एक जो सफलताएं अर्जित की हैं, उनके जरिए खोजें एवं अनुसंधानों से कई संसाधनों के दोहन के रास्ते खुलते हैं। इसके जरिए कारोबारी हित साधे जा सकते हैं और रक्षा क्षेत्र की जरूरतों को भी पूरा किया जा सकता है। अंतरिक्ष में उपलब्धियों की बात करें, तो अमेरिका और रूस के बाद चीन इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। वह मानव मिशन को अंतरिक्ष में भेज चुका है और इससे आगे चलकर चंद्रमा के खनिजों के दोहन की बात भी उसके जेहन में है। साथ ही वह अपने राकेटों से विदेशी उपग्रहों के प्रक्षेपण बाजार में भी सेंध लगाना चाहता है। अपनी स्थापना के साढ़े पांच दशकों के अंतराल में इसरो ने एक से बढ़कर एक कीर्तिमान स्थापित किए हैं ताकतवर प्रक्षेपण राकेटों के निर्माण और बहुदेशीय उपग्रहों को अंतरिक्ष की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित करने से लेकर चंद्रमा और मंगल ग्रह की खोज संबंधी अभियानों ने पहले से ही अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की धमक कायम कर रखी है। बीते चार-पांच वर्षों में इसरो ने कई नए मोर्चों पर एक साथ कदम आगे बढ़ाए हैं। वर्ष 2023 में इसरो को कई सफलताएं एक साथ मिलीं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान-3 को सफलतापूर्वक उतारना। तब यह कारनामा करने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया था यह कामयाबी इसलिए भी अहम मानी जा सकती है, क्योंकि न तो अमेरिका जैसी महाशक्ति ऐसा कर पाई है और न ही उसका चिर-प्रतिद्वंद्वी रूस वर्ष 2023 में ही आनन-फानन में किए गए ऐसे ही प्रयास में सफलता हासिल कर पाया था। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अरसे से दुनिया की तमाम अंतरिक्ष एजेंसियों की नजर थी, लेकिन वैज्ञानिक और तकनीकी धरातल पर यह काम इतना कठिन है कि इसे अंजाम तक पहुंचाना रूस-अमेरिका या चीन के लिए भी एक चुनौती बन गया था। इसे भी ध्यान में रखना होगा कि अंतरिक्ष क्षेत्र में किसी बड़का कोई मतलब तभी है, जब उससे कारोबार और अंतरिक्ष अनुसंधान के अलावा कुछ ठोस जमीनी लक्ष्य भी हासिल हो और उनसे देश की जनता की बेहतर एवं विकास का कोई रास्ता खुले। उम्मीद है कि इसरो की क्षमताओं के बल पर देश जो कुछ हासिल करेगा, उससे ठोस आर्थिक विकास सुनिश्चित होगा और उसका फायदा जनता को मिलेगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब



संपादकीय

चिंतन-मनन



शिक्षा सीखने का भविष्य है



विजय गर्ग

एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें जहां सीखना व्यक्तिगत, आकर्षक और सभी के लिए उपलब्ध हो। कोई कठोर कक्षाएं या एक आकार के सभी पाठ्यक्रम नहीं यह एक दूर का सपना नहीं है; यह सीखने का भविष्य है, और यह आपके विचार से भी करीब है। क्या आप यह जानने के लिए तैयार हैं कि तेजी से बदलती दुनिया की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षा कैसे विकसित हो रही है ?

पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों को अक्सर 21वीं सदी की मांगों के साथ तालमेल रखने में कठिनाई होती है। कुछ चुनौतियों में शामिल हैं निजीकरण की कमी: छात्र अलग-अलग गति से सीखते हैं और उनकी सीखने की विविध शैली होती है। पारंपरिक कक्षाएं अक्सर इन व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल रहती हैं। सीमित जुड़ाव: नियमित याद रखना और निर्भर्य सीखना वास्तविक समय की कमी का कारण बन सकता है। पहुंच की बाधाएं: सामाजिक-आर्थिक कारक, भौगोलिक स्थान और शारीरिक विकलांगता कई लोगों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच को सीमित कर सकती है। अप्रचलित पाठ्यक्रम: छात्र जो कुछ सीखते हैं वह अक्सर उनके आसपास की दुनिया पर लागू नहीं हो सकता है। ये समस्याएं शिक्षा के लिए एक नए दृष्टिकोण की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती हैं - जो अधिक लचीला, समावेशी और प्रासंगिक हो।

समाधान एक अधिक गतिशील और व्यक्तिगत सीखने का अनुभव बनाने के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी को गले लगाना है। सीखने का भविष्य इस प्रकार है

व्यक्तिगत शिक्षण पथ: छात्रों को अपनी गति से सीखने और उनकी ताकतों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देने के लिए व्यक्तिगत आवश्यकताओं और हितों के अनुरूप शिक्षा। इंटरैक्टिव और इमर्सिव प्रौद्योगिकियां: आकर्षक और यादगार सीखने के अनुभव बनाने के लिए आभासी वास्तविकता, संबंधित वास्तविकता और गेमिंग का उपयोग करना। मिश्रित शिक्षण मॉडल: ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से शिक्षा तक पहुंच का विस्तार करना तथा व्यक्तिगत और ऑनलाइन सीखने के सर्वोत्तम पहलुओं को जोड़ना। आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान पर ध्यान केंद्रित करना: जटिल तथा तेजी से विकसित विश्व में सफल होने के लिए छात्रों को आवश्यक कौशल प्रदान करना। अभ्यास में व्यक्तिगत शिक्षा

अनुकूलन सीखने वाले प्लेटफॉर्म छात्र के ज्ञान का मूल्यांकन करने और सामग्री को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग करते हैं। यह छात्रों को अपनी गति से अवधारणाओं पर प्रभुत्व प्राप्त करने की अनुमति देता है और जब उन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है तो उन्हें लक्षित सहायता मिलती है

प्रौद्योगिकी में अंतर
ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म दूरस्थ क्षेत्रों और विकलांग लोगों के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ बना रहे हैं। वर्चुअल फील्ड ट्रिप, इंटरैक्टिव सिमुलेशन और सहयोगी परियोजनाएं सीखने को नए और रोमांचक तरीकों से जीवन में ला रही हैं।

ये समाधान पहले से ही महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहे हैं, जिससे छात्रों को अपनी शिक्षा पर नियंत्रण रखने और अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने में सक्षम बनाया जा रहा है।

सीखने का भविष्य केवल एक अवधारणा नहीं है; यह एक आंदोलन है। यहां बताया गया है कि आप इसका हिस्सा कैसे बन सकते हैं अभिनव शैक्षिक पहलों का समर्थन करना: उन नीतियों और वित्तपोषण की वकालत करें जो सभी के लिए व्यक्तिगत शिक्षा, प्रौद्योगिकी एकीकरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच का समर्थन करते हैं। जीवन भर की शिक्षा का गले लगाएं: तेजी से बदलती हुई दुनिया में प्रासंगिक रहने के लिए लगातार नए ज्ञान और कौशल खोजें। अपने विचार और अनुभव साझा करें: बातचीत में शामिल हों और सीखने के भविष्य को आकार देने में योगदान दें। एक साथ, हम ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जहां शिक्षा सभी को समृद्ध करने में सक्षम बना सके। इस ब्लॉग पोस्ट में शिक्षा का विकासशील परिदृश्य और 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए इसका परिवर्तन कैसे किया गया है। नवाचार, प्रौद्योगिकी और व्यक्तिगत सीखने के दृष्टिकोण को अपनाकर हम एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जहां शिक्षा आकर्षक हो, सुलभ हो तथा व्यक्ति सभी पूरी क्षमता के साथ पहुंच सकें। कार्रवाई के लिए आह्वान पाठकों को जीवन भर की शिक्षा का समर्थन करके और अपने विचारों को साझा करके इस भविष्य को आकार देने में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार
प्रतिष्ठित शिक्षाविद् सड़क कुर चंद
एमएचआर मलोट पंजाब

अवसरों से भरपूर आयुर्वेद चिकित्सा क्षेत्र

डॉ विजय गर्ग

आयुर्वेद में कैरियर लोगों के स्वास्थ्य-संबंधन का जरिया है। युवा आयुर्वेदचार्म, फार्मासिस्ट या नर्स बनने का विकल्प चुन सकते हैं। आयुर्वेदिक डॉक्टर बनने के लिए किसी मान्यताप्राप्त कॉलेज या संस्थान से बीएएमएस की पढ़ाई जरूरी है। वहीं फार्मासिस्ट के लिए डी.फार्मा आयुर्वेद व बी. फार्मा आयुर्वेद के कोर्स करने होते हैं। वहीं आयुर्वेदिक नर्सिंग कोर्स भी उपलब्ध हैं।

भारत की प्राचीन चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद आजकल फिर से लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। आधुनिक युग में जब लोग एलोपैथिक दवाओं के दुष्प्रभावों से चिंतित हैं, तब प्राकृतिक और जड़ से इलाज करने वाली यह पद्धति एक सशक्त विकल्प बनकर उभर रही है। देश-विदेश में आयुर्वेदिक डॉक्टरों, फार्मासिस्टों और नर्सिंग विशेषज्ञों की मांग लगातार बढ़ रही है।

आयुर्वेदाचार्य बनने के लिए कोर्स
आयुर्वेदाचार्य या आयुर्वेदिक डॉक्टर बनने के लिए बी.ए.एम.एस. (बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी) कोर्स करना अनिवार्य है। यह एक स्नातक स्तर का 5 1/2 वर्ष का कोर्स होता है, जिसमें 4 1/2 वर्ष की अकादमिक पढ़ाई और 1 वर्ष की इंटरशिप शामिल है। इस कोर्स में छात्र आयुर्वेद के सिद्धांतों, औषध निर्माण, पंचकर्म, शल्य चिकित्सा, रोग निदान आदि का गहन अध्ययन करते हैं।

शैक्षणिक योग्यता और प्रवेश प्रक्रिया
बी.ए.एम.एस. में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी को 12वीं कक्षा में भौतिकी, रसायन व जीवविज्ञान (पीसीबी) विषयों के साथ न्यूनतम 50 फीसदी अंक प्राप्त होने चाहिए। प्रवेश नीट यूजी (नेशनल एलिजिबिलिटी एवं एंट्रेंस टेस्ट) के माध्यम से होता है। यह परीक्षा हर वर्ष मई माह में राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित की जाती है।
फीस संरचना



सरकारी आयुर्वेदिक कॉलेजों में बी.ए.एम.एस. की फीस तुलनात्मक रूप से कम होती है, औसतन 20,000 से 60,000 रुपये प्रति वर्ष। जबकि निजी कॉलेजों में यह फीस 2 लाख से 5 लाख रुपये प्रति वर्ष तक हो सकती है। संस्थानों में उनकी गुणवत्ता के अनुसार फीस अलग-अलग हो सकती है, जिसकी जानकारी आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज से मिल सकती है। भारत के प्रमुख आयुर्वेदिक कॉलेजों में दोनों तरह के कॉलेज हैं यानी कुछ राजकीय और कुछ निजी आयुर्वेदिक महाविद्यालय / संस्थान। हर प्रदेश में कई नए राजकीय और निजी आयुर्वेदिक कॉलेज स्थापित हुए हैं जिनकी जानकारी आयुष मंत्रालय की वेबसाइट से ली जा सकती है।

प्रमुख सरकारी आयुर्वेदिक कॉलेज
*राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर (राजस्थान): भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय स्तर का शीर्ष संस्थान। यहां बीएएमएस, एमडी तथा पीएचडी तक पढ़ाई होती है। * गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर: इसमें विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। यहां बीएएमएस, एमडी, पीएचडी के अतिरिक्त विदेशी विद्यार्थियों के लिए कई अल्पावधि के आयुर्वेद और नेचुरोपैथी से

संबंधित पाठ्यक्रम की व्यवस्था की गई है।

* बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू), वाराणसी, उत्तर प्रदेश: बीएचयू के आयुर्वेद संकाय में बीएएमएस से लेकर उच्च शोध तक की शिक्षा दी जाती है। यह भारत के सबसे पुराने संस्थानों में से एक है। * तिलक आयुर्वेद महाविद्यालय, पुणे (महाराष्ट्र): 1933 में स्थापित, भारत के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित सरकारी आयुर्वेदिक कॉलेजों में से एक। * अल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद, नई दिल्ली: 2017 में स्थापित राष्ट्रीय संस्थान, जहां पारंपरिक आयुर्वेद और आधुनिक तकनीक का समन्वय किया जाता है। * श्री कृष्णा आयुर्वेदिक कॉलेज, कुरुक्षेत्र: इस राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज में बीएएमएस और आयुर्वेदिक फार्मसी की पढ़ाई होती है

प्रमुख निजी आयुर्वेदिक कॉलेज
* श्री बाबा मस्तनया आयुर्वेदिक कॉलेज एंड हॉस्पिटल, रोहतक, हरियाणा। * एम एसएम, इस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद, खानपुर कलां, हरियाणा। * गोड ब्रह्मण आयुर्वेदिक कॉलेज (जीबीएसी), रोहतक, हरियाणा। * डॉ. डी. पाटिल आयुर्वेद कॉलेज, पुणे (महाराष्ट्र) * भारती विद्यापीठ आयुर्वेद महाविद्यालय

* श्री धन्वंतरि आयुर्वेद कॉलेज, चंडीगढ़ * एम. एस. आयुर्वेदिक कॉलेज, एर्नाकुलम (केरल)।

आयुर्वेदिक फार्मसी और नर्सिंग कोर्स
आयुर्वेद क्षेत्र में डिप्लोमा इन आयुर्वेदिक फार्मसी (डी.फार्मा आयुर्वेद) और बैचलर इन आयुर्वेदिक फार्मसी (बी. फार्मा आयुर्वेद) कोर्स भी अत्यंत लोकप्रिय हैं। इन कोर्सों की आवधि क्रमशः 2 और 4 वर्ष होती है। वहीं आयुर्वेदिक नर्सिंग कोर्स में रोगियों की देखभाल, औषधि तैयार करना और पंचकर्म चिकित्सा की जानकारी दी जाती है।

आयुर्वेद की ओर बढ़ता रुझान
आजकल लाइलाज मानी जाने वाली बीमारियों जैसे गठिया, डायबिटीज, त्वचा रोग, माइग्रेन, मानसिक तनाव आदि में लोग आयुर्वेद को शरण ले रहे हैं। जिसका मुख्य कारण शायद एलोपैथिक दवाओं के लंबे समय तक प्रयोग करने से उत्पन्न होने वाले साइड इफेक्ट हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा न केवल शरीर का उपचार करती है, बल्कि मन और आत्मा के संतुलन पर भी बल देती है। यही कारण है कि आधुनिक युग में भी यह प्राचीन पद्धति फिर से जन-जन को पसंद बन रही है।

थकते कदम : डॉ विजय गर्ग

धरती पर जीवन के पदार्पण होते ही वर कई चरणों में अपनी यात्रा की शुरुआत कर देता है। शैशवावस्था, बाल्यावस्था, तरुणावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और श्रौं में 'युवावस्था के दौर में मानव मन कई अनुभूतियों और कार्यों से अपने को संतुष्ट रखने को विवश है। बचपन के बाद तरुण काल में उसे विद्यालय के प्रांगण आर्भित कर दिया जाता है। जीवन निर्माण के उद्देश्य में व्यक्ति आगे की कड़ियों से तालमेल स्थापित करते हुए अध्ययन, व्यवसाय, रीति-गृहस्थी, नौकरी और अन्य प्रकृतियों की पूर्णता के बाद एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर आकर उबर जाता है, जब वह अपने सभी बुनियादी दायित्वों से भी आजाद हो जाता है। इस क्रम में पुरी-पूर की शादी के बाद नवदंपति के लिए नूतन घर गृहस्थी के नए आयाम प्रकट होते हैं। जीवन के उत्तरार्ध काल में माता-पिता जब अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होते हैं, तब उनके पास अपनी एक सक्रिय दिनचर्या नहीं होती। इस दौर में परिवार के सदस्य शिशु के आगमन की बात जोरों से और जब वह छड़ी आ जाती है तो बच्चे के माता-पिता के साथ उसके दादा-दादी, नाना-नानी के जीवन में

आनंद की लहरें उफान पर होती हैं। इस स्थिति में बुजुर्गों की दुनिया पूरी तरह परिवर्तित होती दिखती है। मासूम की मुस्कान और उसे अपनी गोद में लेकर स्नेह सिंचित करने का पल बुजुर्गों को नैसर्गिक सुख की अनुभूति से ललाबत भर देता है। धीरे-धीरे शिशु अपनी उम्र के हूट हूट पर आ जाता है, जब वह अपने पैरों पर खड़ा होता है, दुमकरो हुए चलतकदमी करना कुछ बुरबुराना और घर के सभी सदस्यों को परभावने की अलम सज्ज से झुका है। माता-पिता के साथ बिताए पलों के बाद बच्चे का शेष समय उसके नानी-दादी, दादा- नाना के साथ आर्भिक बीताता है। ये लोग भी बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा करते हैं कि कब उन्हें नब्बे बच्चे को अपने पास रखने का मौका मिले। कई बात मनोवैज्ञानिकों के अनुभव का सारोह है कि बुजुर्ग जब अपने पोते-पोती, नाती - नतीनी की बाल्यावस्था की गतिविधियों से बंध जाते हैं, तो उनकी उम्र बढ़ने की गति कम होने लगती है। 12 आर्भिक संतुष्टि और सुख के दृश्यों को जब गिन्य जौते हैं, तो उनकी प्रसन्नता के सूचकांक में अनुपूर्व वृद्धि दर्ज होती है। इस अवस्था में वे अपने स्वास्थ्य की छोटी-मोटी समस्याओं को भूल जाते हैं, क्योंकि उनका वरम लक्ष्य बच्चों के साथ समय बिताना तय है। यह छड़ी उन्हें अकरोलेन से राहत दिलाते हुए खुरा रखती है। बच्चों के साथ बुजुर्गों के भावनात्मक लगाव के कुछ अन्य सकारात्मक लाभ भी मिलते हैं, जैसे जीवन के अन्य सांसारिक कार्यों से मुक्त होकर वे स्वच्छंदतापूर्वक में शिल्पकृत स्वतंत्र महसूस करते हैं। इससे उनकी प्रसन्नता और उत्साह में वृद्धि करने वाले सर्वांग का प्रवाद भी बना रहता है। बहती उम्र का तकाजा है कि बुजुर्गों के शरीर में कुछ न कुछ व्यथियां प्रवेश कर जाती हैं, जिसमें मज्जुर- मज्जुर, रक्तापच, कैल्शियम की कमी। इस

कारण से वे अपने रोग के निदान के लिए अधिक घिंटित हो जाते हैं, लेकिन जब उनके पोते- पोती, नाती- नतीनी अपने कदमों में गति भरने लगते हैं तो उन्हें ससारे की जरूरत होती है, जिसका मूल आधार बुजुर्ग बनते हैं।

बच्चों के साथ आर्भिक समय बिताने के फलस्वरूप बुजुर्ग का श्रिथक चलना-फिरना से जाता है। घर के आंगन या आसपास किसी उद्यान में बच्चों को ते जाकर देखने के साथ खेलना, उसके पीछे अपनी गति में दौड़ने जैसी अन्य गतिविधियां उन्हें सक्रिय रखती हैं। शाम के समय बच्चों को कक्षाओं सुनाने और कभी-कभी अपने ससारे से उन्हें खाना खिलाते से बच्चे बुजुर्गों की और आकर्षित रहते हैं। कभी गांव में बजते बच्चों को अपनी पीठ और कंधों पर बिठाकर कुछ दूर घुमा दिया करते थे, जबकि दोनों घुटनों पर उन्हें सवार कर घुमा सुनाने (घुमा- नाना) से बच्चों का मज्जुर मनोरंजन लुभा करता था। इस प्रक्रिया से बुजुर्गों को तानमद्द व्यायाम से जाता था।

में बच्चों की देखभाल में सम्मिलित लोग बुजुर्गों की तुलना कम सुस्त होते हैं। यह सक्रियता बुजुर्गों के शारीरिक वजन को नियंत्रित करते हुए उनके स्वास्थ्य को ठीक रखते हैं। अकरोलेन के शिकार अधिकतर बुजुर्ग अक्सर मेजबूरी दिव्यों की घिंटन की गंभीरता के चलते मानसिक अवसाद के शिकार हो जाते हैं। बच्चों के साथ उनकी रोयक सम्मिलिता इस रोग को शरीरक करती है। आत्र की गतिगत मानदोड में श्रिथकार बुजुर्ग अविदा से घिंटित होते हैं, लेकिन जब वे बच्चों की किलकारियां सुनते हैं, उसकी मज्जुर मुस्कान देखते हैं, उनके साथ खेल-खेल में अपना श्रिथक समय व्यतीत करते हैं, तो उन्हें मज्जुर गीत भी आती है और वे रोज सुखर तराता महसूस करते हैं। एकल परिवार के बुजुर्गों का अविदा से घुमा सुनाने (घुमा- नाना) से बच्चों का मज्जुर मनोरंजन लुभा करता था। इस प्रक्रिया से बुजुर्गों को तानमद्द व्यायाम से जाता था।

में बच्चों की देखभाल में सम्मिलित लोग बुजुर्गों की तुलना कम सुस्त होते हैं। यह सक्रियता बुजुर्गों के शारीरिक वजन को नियंत्रित करते हुए उनके स्वास्थ्य को ठीक रखते हैं। अकरोलेन के शिकार अधिकतर बुजुर्ग अक्सर मेजबूरी दिव्यों की घिंटन की गंभीरता के चलते मानसिक अवसाद के शिकार हो जाते हैं। बच्चों के साथ उनकी रोयक सम्मिलिता इस रोग को शरीरक करती है। आत्र की गतिगत मानदोड में श्रिथकार बुजुर्ग अविदा से घिंटित होते हैं, लेकिन जब वे बच्चों की किलकारियां सुनते हैं, उसकी मज्जुर मुस्कान देखते हैं, उनके साथ खेल-खेल में अपना श्रिथक समय व्यतीत करते हैं, तो उन्हें मज्जुर गीत भी आती है और वे रोज सुखर तराता महसूस करते हैं। एकल परिवार के बुजुर्गों का अविदा से घुमा सुनाने (घुमा- नाना) से बच्चों का मज्जुर मनोरंजन लुभा करता था। इस प्रक्रिया से बुजुर्गों को तानमद्द व्यायाम से जाता था।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

सालिया साही का उखाड़ना: आधार कार्डों का अंबार!

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: सालिया साही में तोड़फोड़ के दौरान हजारों आधार कार्ड मिले। एक ही घर से इतने सारे आधार कार्ड मिलने से कई सवाल उठ रहे हैं। ये असली हैं या नकली? ये आधार कार्ड क्यों और किस मकसद से रखे गए थे? ये आधार कार्ड कौन रख रहा था? इसकी जांच जरूरी है। तोड़फोड़ की प्रक्रिया चल रही है और सालिया साही के निवासी इसका विरोध कर रहे हैं। वहाँ तनावपूर्ण

स्थिति पैदा हो गई है। सालिया साही में बीएमसी और बीडीए ने मिलकर तोड़फोड़ की प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह तोड़फोड़ एकान्न कानन से धनरुवा तक 13 किलोमीटर बाई समानांतर सड़क के लिए हो रही है। बीडीए और बीएमसी पहले ही तोड़फोड़ कर चुके हैं। आज से अगले 24 तारीख तक लगभग 517 बचे हुए घरों को तोड़ा जाएगा। तोड़फोड़ के लिए बीएमसी बीडीए बिजली विभाग के साथ 5 प्लाटून बल तैनात किया गया है।



हाईकोर्ट ने सोरेन सरकार को सभी 334 थानों पर सीसीटीवी लगाने का दिया निर्देश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड हाईकोर्ट ने हेमंत सोरेन सरकार को प्रदेश के सभी थानों में सीसीटीवी कैमरा लगाने का निर्देश दिया है। झारखंड हाईकोर्ट ने साफ कहा है कि यह कारवाय तय समयसीमा के भीतर पूरी की जानी चाहिए ताकि थानों में होने वाली हर गतिविधि पारदर्शी रहे और किसी भी प्रकार की अवैध कार्रवाई पर रोक लग सके।

झारखंड हाईकोर्ट ने मंगलवार को 'प्रॉपर्टी रिएल्टी प्राइवेट लिमिटेड', शौभिक बनर्जी सहित अन्य की ओर से दाखिल एक याचिका पर सुनवाई के दौरान है आदेश दिया। पिछली सुनवाई में अदालत ने मुख्य सचिव, गृह सचिव, डीजीपी और आईटी विभाग की सचिव को सशरीर उपस्थित होने का आदेश दिया था। अदालत के निर्देश पर ये सभी वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित हुए और कोर्ट के समक्ष अब तक की प्रगति रिपोर्ट पेश की।

सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि 31 दिसंबर से पहले सभी जिलों के थानों में सीसीटीवी कैमरे लगाने के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) और टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली जाए। इसके बाद राज्य के सभी 334 थानों में जल्द से जल्द कैमरे लगाने का काम आरंभ किया जाए।

अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि सीसीटीवी कैमरे चालू अवस्था में रहें और



थाने में लगायें कैमरा : झारखंड हाईकोर्ट का आदेश

उनका डाटा नियमित रूप से संरक्षित किया जाए। साथ ही कोर्ट ने 5 जनवरी तक आदेश के अनुपालन की रिपोर्ट मांगी है। यह मामला पश्चिम बंगाल निवासी शौभिक बनर्जी की याचिका पर आधारित है। याचिकाकर्ता ने बताया कि चेक बाउंस मामले में वह धनबाद कोर्ट में जमानत के लिए आए थे, लेकिन धनबाद पुलिस ने उन्हें दो दिनों तक अवैध रूप से थाना परिसर में रोके रखा और जबरन दबाव बनाकर दूसरे पक्ष का पक्ष लिया। उन्होंने दावा किया कि पूरी घटना बैंक मोड़ थाना में लगे सीसीटीवी

कैमरे में रिकॉर्ड हुई थी, किंतु पुलिस ने अदालत को बताया कि केवल दो दिन का ही सीसीटीवी बैंकअप उपलब्ध है।

झारखंड हाई कोर्ट ने इस पर गंभीर आपत्ति जताते हुए कहा कि धनबाद जैसे अपराधग्रस्त शहर में सीसीटीवी डेटा का सही रखरखाव नहीं होना बेहद चिंताजनक है। इसके साथ ही अदालत ने झारखंड सरकार को आदेश दिया कि भविष्य में ऐसी लापरवाही नहीं होनी चाहिए। सभी थानों में रिकॉर्डिंग का पर्याप्त स्टोरेज सुनिश्चित किया जाए

माओनेता हिडमा और उनकी पत्नी सहित 6 की मौत

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

मालकानागिरी/भुवनेश्वर : आंध्र प्रदेश में सुरक्षा बलों के साथ बड़ी संख्या में माओवादियों की मुठभेड़। सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में 6 माओवादी मारे गए। अल्लूरी सीताराम राजू जिले के मेरेदुमुली में गोलीबारी। मृतकों में एक शीर्ष माओवादी नेता के शामिल होने की सूचना। मुठभेड़ में शीर्ष माओवादी नेता माडवी हिडमा के मारे जाने की सूचना। आंध्र के डीजीपी से जानकारी मिली है कि बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चल रहा है। मुठभेड़ में उनकी पत्नी राजे भी बच गईं। असुरी सीताराम जंगल में मुठभेड़ जारी है। इसके साथ ही 6 और माओवादी भी मारे गए। दूसरी ओर, मलकानागिरी सीमा पर एक और मुठभेड़। छत्तीसगढ़ के सुकुमा जिले के एराबोर जंगल में गोलीबारी, एक माओवादी के मारे जाने की खबर। दोनों ओर से अभी भी गोलीबारी जारी है। एराबोर जंगल



मलकानागिरी जिले के पोडिया थाने के बाहर है। मलकानागिरी सीमा पर सैनिक-माओवादी मुठभेड़। आंध्र

प्रदेश के अल्लूरी सीताराम राजू जंगल में मुठभेड़। जवानों की गोलीबारी में 6 माओवादियों के मारे जाने की खबर है।

अधिवक्ता ने पूर्व डीजीपी द्वारा अपराधियों के मिलकर कोयला से करोड़ों वसूली का थाने मे की शिकायत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड उच्च न्यायालय के अधिवक्ता राजीव कुमार ने मंगलवार को रांची के डोरंडा थाने में झारखंड के पूर्व डीजीपी अनुराग गुप्ता के विरुद्ध ऑनलाइन शिकायत की है। उन्होंने अपनी शिकायत का आधार मीडिया रिपोर्ट्स व झारखंड विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी द्वारा लगाए गए आरोपों को बताया है।

सिर्फ खबर पढ़ेपूर्व डीजीपी अनुराग गुप्ता पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं। हालांकि, डोरंडा थाने को की गई ऑनलाइन शिकायत पहले एसएसपी कार्यालय जाएगी, उसके बाद आवश्यक दिशा-निर्देश के साथ डोरंडा थाने जाएगी। पुलिस इस मामले की जांच करा सकती है।

अधिवक्ता राजीव कुमार ने अपनी ऑनलाइन शिकायत में लिखा है कि उन्हें मीडिया रिपोर्ट्स तथा उपलब्ध जानकारी से पता चला है कि पूर्व डीजीपी अनुराग गुप्ता ने अपना कार्यकाल में झारखंड के कुख्यात अपराधी सुजीत सिन्हा आदि से मिलकर कोयलांचल शांति समिति (केएसएस) नामक



संगठन का गठन कर पूरे राज्य में कोयला कारोबारियों, ठेकेदारों, ट्रांसपोर्टर्स, डॉक्टरों, व्यवसायियों आदि से करोड़ों रुपये की वसूली

की है। पद पर रहते हुए वे अपरोक्ष रूप से झारखंड के सबसे बड़े आपराधिक संगठन का संचालन

कर रहे थे। नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने प्रेस वार्ता में भी खुलासा किया है कि एक अपराधी के कहने पर अनुराग गुप्ता ने जेल में बंद अपराधी अमन साहू से तथाकथित मुठभेड़ कराया।

बाबूलाल मरांडी ने यह भी खुलासा किया है कि कोयलांचल शांति समिति को पाकिस्तान से प्राप्त हथियार मुहैया कराया गया है। यह खुलासा न सिर्फ झारखंड के लिए खतरा का विषय है, बल्कि पूरे देश की सुरक्षा के लिए चिंता का विषय है।

पद पर रहते हुए वे अपरोक्ष रूप से झारखंड के सबसे बड़े आपराधिक संगठन का संचालन कर रहे थे। नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने प्रेस वार्ता में भी खुलासा किया है कि एक अपराधी के कहने पर अनुराग गुप्ता ने जेल में बंद अपराधी अमन साहू से तथाकथित मुठभेड़ कराया।

बाबूलाल मरांडी ने यह भी खुलासा किया है कि कोयलांचल शांति समिति को पाकिस्तान से प्राप्त हथियार मुहैया कराया गया है। यह खुलासा न सिर्फ झारखंड के लिए खतरा का विषय है, बल्कि पूरे देश की सुरक्षा के लिए।

कानपुर में दिल्ली से बिहार जा रही डबल डेकर बस पलटने से तीन की मौत, दो दर्जन घायल

सुनील बाजपेई

कानपुर। नशे की हालत में तेज रफ्तार से वाहन चलाना लोगों की असमय मौत का कारण लगातार बना रहा है। इसी क्रम में दिल्ली से बिहार जा रही डबल डेकर बस के पलटने से तीन यात्रियों की मौत हो गई, जबकि दो दर्जन से ज्यादा घायल हो गए। उन्हें यहां के हैलट हालत अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आज मंगलवार की सुबह हुई इस घटना में 15 लोगों की हालत गंभीर बताई गई है। बताते हैं की घटना चालक को झपकी आ जाने की वजह से हुई। साथ ही वह नशे में भी बताया गया है। यहां पुलिस से प्राप्त विवरण के मुताबिक बिहार के अरोल थानाक्षेत्र अंतर्गत आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे पर मंगलवार तड़के दिल्ली से बिहार जा रही एक डबल डेकर बस अनियंत्रित होकर पलट गई, जिससे मौके पर ही तीन यात्रियों की मौत हो गई और दो दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए।

मौके पर पहुंची पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, यह हादसा उस वक्त हुआ जब बस दिल्ली से बिहार की तरफ जा रही थी और बिहार के अरोल थानाक्षेत्र में एक्सप्रेसवे पर मोड़ के पास पहुंची। भोर का समय होने के कारण संभवतः चालक नियंत्रण खो बैठा और बस पलट गई। हादसा इतना भीषण थी कि बस के परखच्चे उड़ गए।

इस हादसे की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस घायलों को तत्काल सीएचसी ले गई। वहीं, 15 लोगों की हालत गंभीर होने के कारण उन्हें कानपुर के हैलट अस्पताल में रेफर कर दिया गया है। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मृतकों की शिनाख्त की कोशिश की जा रही है।



इन्दिरा गांधी: वह शक्ति, जिसे जन्म ने नहीं—संघर्ष ने गढ़ा

जब नवंबर की ठंडी हवाएँ उत्तर भारत के मैदानों में उतरती हैं, तब इलाहाबाद का पुराना आनंद भवन कुछ और ही रंग में रंग जाता है। उन्नीस नवंबर की सुबह सन् 1917 में, जब ब्रिटिश साम्राज्य अपने चरम पर था और स्वराज का सपना अभी कोरे कागज़ पर लिखी दूर की कौड़ी मात्र था, उस घर में एक बच्ची ने पहली सांस ली। नाम रखा गया इन्दिरा प्रियदर्शिनी। पर इतिहास ने उसे दूसरा नाम दिया — भारत की लौह महिला। पिता जवाहरलाल उस दिन लंदन में थे, माँ कमला बेहद कमजोर। लेकिन जिस क्षण वह रोई, घर के बुजुर्गों को लगा मानो कोई पुराना वचन पूरा हुआ हो — नेहरू वंश में अब एक ऐसी आगूणी जो आग और फूल, दोनों को एक साथ रख सकेगी। उस घर में जन्म लेना ही अपने आप में सजा और वरदान दोनों था। जहाँ नारते की मेज पर चर्चा होती थी लेकिन की क्रांति की, गाँधी के सत्याग्रह की, और नेहरू के विश्व-बंधुत्व की, वहाँ एक बच्ची ने आँखें खोलीं जो आगे चलकर इन तीनों विचारों को एक साथ पिरोकर नया भारत गढ़ेगी। 12-13 साल की उम्र में उसने बच्चों की वानर सेना (मंकी ब्रिगेड) बनाई — कुछ दर्जन बच्चे, जो खादी

पहने, विदेशी कपड़ा जलाते, और गाँव-गाँव में चरखा पहुँचाते। ब्रिटिश इंटेलिजेंस की फाइलों में उस छोटी-सी बच्ची का नाम दर्ज हो गया — “खतरनाक बाल-क्रांतिकारी”। शांतिनिकेतन में टैगोर ने उसे देखकर कहा था, “बेटी, तुम्हारी आँखों में आग है, इसे समंदर बना लो।” उसने समंदर बना लिया। पर जब जरूरत पड़ी, तो उसी समंदर को हलकों में बदलकर दुश्मनों को डुबो भी दिया। 1942 में फिरोज गांधी से शादी की, शादी के नौ दिन बाद दोनों गिरफ्तार होकर जेल चले गए। फिर बाहर आकर फिर जेल गए। हर बार दरवाजा खुलता तो वह पहले से ज़्यादा मजबूत निकलतीं — जैसे लोहा आग में तपकर सोना बन जाता है। आजादी के बाद जब पंडित नेहरू प्रधानमंत्री बने, तब भी इन्दिरा ने कभी अपनी छाया नहीं डाली। वह पद के पीछे रहकर देश की पहली अनौपचारिक राजदूत बनीं। विदेशी महमान आते तो वह चाय परोसतीं, साथ ही अनौपचारिक बातचीत में भारत की स्थिति इतनी साफ-साफ रखतीं कि बड़े-बड़े दूतावास हैरान रह जाते। 1964 में लाल बहादुर शास्त्री ने उन्हें सूचना एवं प्रसारण मंत्री बनाया। तब तक देश उन्हें ‘गूंगी गुड़िया’ कहने लगा था।

पर 1966 में जब शास्त्रीजी का निधन हुआ और कांग्रेस के बुजुर्ग ‘सामूहिक नेतृत्व’ की बात करने लगे। वे सोच रहे थे कि नेहरू की बेटी को गूंगी गुड़िया बनाकर कुर्सी पर बिठा देंगे, वह नाचती रहेगी और हम नचाते रहेंगे। तब वही गूंगी गुड़िया एक झटके में देश की पहली महिला प्रधानमंत्री बन गईं। उसी गुड़िया ने दो साल के अंदर बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया, राजा-महाराजाओं की प्रिवी पर्स छीन ली, और 1971 में जब दुनिया ने कहा “मत लड़ो”, तो उसने कहा, “अब बहुत हो चुका। तेरह दिन। सिर्फ तेरह दिन। ढाका में नब्बे हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने हथियार डाल दिए। अमेरिका का सातवाँ बेड़ा बंगाल की खाड़ी में खड़ा था, पर हिल नहीं सका। रूस ने वीटो डालकर बचाया, फ्रांस ने हथियार दिए, और एक अकेली औरत ने साबित कर दिया कि जब माँ जगती है, तो दुनिया की कोई ताकत उसके बच्चे को छू नहीं सकती। उस युद्ध के बाद दुनिया के नक्शे पर एक नया देश जन्मा — बांग्लादेश। और दुनिया के मानचित्र पर भारत का कद हमेशा के लिए बढ़ल गया।



सत्ता ने उसे अकेला कर दिया। दोस्त कम हुए, दुश्मन बढ़े। रातें लंबी होती गईं। 1975 में इलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला आया, विपक्ष सड़कों पर उतरा, और उस अकेली औरत ने आपातकाल लगा दिया। वह सबसे काला अध्याय था। पर उस अध्याय को लिखने वाली कलम भी उसी की थी, और उसे मिटाने का साहस भी उसी ने दिखाया। 1977 में जब हारों, तो हार स्वीकार की। जेल गईं, फिर 1980 में जब जनता ने फिर नक्शे पर एक नया देश जन्मा — बांग्लादेश। और दुनिया के मानचित्र पर भारत का कद हमेशा के लिए बढ़ल गया।

था। उसने साफ कहा, “मेरा सिख भाई मेरे खून की आखिरी बूंद तक मेरा है, पर जो मेरे भारत को तोड़ना चाहे, वह मेरा दुश्मन है।” उस आखिरी सुबह, 31 अक्टूबर 1984 को, जब वह अपने निवास से ऑफिस की ओर जा रही थीं, तब भी उनकी चाल में वही पुरानी दृढ़ता थी। गोली चलने की आवाज़ हुई और वह धरती पर गिर पड़ीं। पर अजीब बात यह है कि उस पल भी उनके चेहरे पर कोई डर नहीं था — जैसे उन्हें पता था कि मृत्यु भी उन्हें रोक नहीं सकती। वह मरकर भी अमर हो गईं। आज जब हम नवंबर की उन्नीस तारीख को उनकी जयंती मनाते हैं, तो दरअसल हम एक औरत की नहीं, एक युग की याद मनाते हैं — वह युग जब भारत ने सीखा कि औरत कमजोर नहीं, सृजन और संहार दोनों की देवी हो सकती है। वह युग जब दुनिया ने देखा कि साहस का कोई लिंग नहीं होता। वह युग जब एक औरत ने साबित किया कि ममता और मारकाट, करुणा और क्रूरता, दोनों एक ही हृदय में रह सकते हैं। वह चली गईं, पर उनकी छाया आज भी दिल्ली की गलियों में घूमती है। हर बार जब देश संकट में होता है, लोग अनायास पूछ बैठते हैं — “इन्दिरा

होतीं तो क्या करतीं?” वह सवाल ही उनकी अमरता का प्रमाण है। क्योंकि जिसे मरने के इकतालीस साल बाद भी लोग डरते हैं, पूछते हैं, याद करते हैं, और सम्मान देते हैं — वह कभी मरती ही नहीं। इन्दिरा गाँधी नहीं रहीं। इन्दिरा गाँधी भारत बन गई हैं। और जब तक यह भारत रहेगा, इन्दिरा रहेगी। वह पैदा हुई थीं एक ऐसे घर में जहाँ दीवारों पर आजादी की धूल जमी थी। और चली गईं एक ऐसे देश को छोड़कर जो आज दुनिया की पाँचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसके पास परमाणु हथियार हैं, जिसकी अंतरिक्ष एजेंसी चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा फहरा चुकी है। उस पूरे सफर में कहीं न कहीं एक औरत की उँगली के निशान हैं — कभी नरमी से, कभी कठोरता से, पर हमेशा आगे की ओर। इसलिए आज जब हम उन्नीस नवंबर को फूल चढ़ाते हैं उनकी समाधि पर, तो दरअसल हम भारत के उस सुनहरे अध्याय को सलाम करते हैं जिसकी पहली और आखिरी पंक्ति एक ही नाम से लिखी गई है — इन्दिरा।

प्रो. आरके जैन “अरिजीत”, बड़वानी (मप्र)

[रानी लक्ष्मीबाई: वो नाम जो कभी झुका नहीं]

रानी लक्ष्मीबाई की जयंती सिर्फ एक तिथि का स्मरण नहीं, बल्कि उस अदम्य साहस की पुनः स्थापना है जिसने अंग्रेजी साम्राज्य की नींव तक हिला दी थी। भारत के इतिहास में बहुत कम ऐसे क्षण आए हैं जब एक व्यक्तित्व ने अपने अस्तित्व मात्र से अन्याय के विरुद्ध एक पूरे युग को प्रेरित किया हो। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की जयंती ऐसा ही एक अवसर है—जहाँ हम उस निडर स्त्री को याद करते हैं जिसने मात्र तेईस—चौबीस वर्षों की उम्र में वह कर दिखाया जो विशाल युद्धक सेनाएँ भी कभी-कभी नहीं कर पातीं। यह दिन हमें उस लौह-इच्छाशक्ति, स्वाभिमान, कर्तव्यनिष्ठा और देशप्रेम की अनोखी मिसाल से दोबारा जोड़ देता है, जिसके कारण लक्ष्मीबाई इतिहास में नहीं, बल्कि भारत के दिल में बसती हैं। 1828 में वाराणसी की पवित्र माटी में जन्मी मणिकर्णिका, या मनु, बचपन से ही एक तूफान थी। जहाँ उस दौर की बालिकाएँ गुड़ियों के खेल में मस्त रहती थीं, वहीं मनु घोड़े की लगाम थामे, तलवार लिए युद्धकला सीख रही थी। उनकी आँखों में सपने नहीं, बल्कि एक

मंजिल थी—खुद को हर बंधन से आजाद रखने की। उनके पिता, मोरोपंत तांबे, ने उनकी इस आग को हवा दी, और मनु ने इसे एक ज्वाला बना दिया। झाँसी के राजा गंगाधर राव से विवाह के बाद वह रानी बनीं, लेकिन उनका मन कभी राजमहल की चकाचौंध में नहीं रमा। वह एक ऐसी शासक थीं, जिनके लिए प्राजा का सुख और सम्मान सर्वोपरि था। उनके दरबार में हर वर्ग को न्याय मिलता था, और यही वजह थी कि झाँसी की जनता उनके लिए सिर्फ रानी नहीं, बल्कि माँ थीं। जब अंग्रेजों ने ‘डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स’ के बहाने झाँसी को हड़पने की चाल चली, तब रानी लक्ष्मीबाई ने वह जवाब दिया, जो आज भी इतिहास के पन्नों में चमकता है—“मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।” यह महज शब्द नहीं थे, यह एक युद्ध का शंखनाद था, जो 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नींव बना। रानी ने न केवल अपने किले को बचाने की ठानी, बल्कि एक ऐसी सेना खड़ी की, जिसमें साहस ही एकमात्र हथियार था। उनकी सेना में सिर्फ पुरुष ही नहीं, बल्कि झलकारी बाई जैसी वीरगंगाएँ भी थीं, जो रानी के

एक इशारे पर जान देने को तैयार थीं। युद्ध के मैदान में, जब रानी अपने गोद लिए बेटे दामोदर को पीठ पर बाँधकर घोड़े पर सवार होती थीं, तब वह सिर्फ एक योद्धा नहीं, बल्कि मातृत्व और देशभक्ति का अनुपम संगम थीं। उनकी तलवार की चमक ने अंग्रेजों को कई रातों तक नींद नहीं सोने दी। रानी लक्ष्मीबाई की रणनीति और नेतृत्व का लोहा अंग्रेज भी मानते थे। जब झाँसी का किला चारों ओर से घिर गया, तब भी उन्होंने हार नहीं मानी। रात के अंधेरे में, अपने विश्वस्त साथियों के साथ, वह किले से निकलीं और कालपी की ओर बढ़ीं। वहाँ से ग्वालियर तक का उनका सफर सिर्फ एक यात्रा नहीं, बल्कि स्वतंत्रता के लिए एक अंतहीन संघर्ष था। ग्वालियर के युद्ध में, 18 जून 1858 को, जब वह शहीद हुईं, तब उनकी उम्र महज 29 साल थी। लेकिन उस छोटी-सी जंजीर में उन्होंने वह कर दिखाया, जो सदियों तक गुंजेगा। माना जाता है कि अपनी आखिरी साँस तक उन्होंने तलवार नहीं छोड़ी, और उनके शहीद होने के बाद भी अंग्रेजों के चेहरों पर खौफ बरकरार था।

रानी की जयंती हमें उनके युद्धकौशल से कहीं अधिक उनकी विचारों की अथाह गहराई को आत्मसात करने का अवसर देती है। वे महज एक योद्धा नहीं थीं, बल्कि एक दूरदर्शी शासक थीं, जिन्होंने झाँसी को समृद्धि और सुरक्षा का स्वर्णिम कवच पहनाने के लिए रात-दिन एक कर दिए। उनके शासन में व्यापार फला, कृषि फूली, और कला ने नया आकाश छुआ। उन्होंने अपने लोगों को एकता के सूत्र में बाँधा और उनके हृदय में यह अटल विश्वास जगाया कि स्वतंत्रता उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। उनकी जयंती हमें यह गहन सबक देती है कि सच्ची देशभक्ति केवल रणभूमि में ही नहीं होती, बल्कि कठक के प्रति अटूट निष्ठा और समाज के उत्थान में भी प्रज्वलित होती है। आज, जब हम आधुनिक भारत की चोटियों को छू रहे हैं, रानी लक्ष्मीबाई की जयंती हमें हमारी जड़ों से जोड़ रखती है। यह पवित्र दिवस हमें गूँजकर पुकारता है कि स्वतंत्रता का मूल्य अनमोल है, और इसे अक्षुण्ण रखने के लिए हर क्षण सजगता और बलिदान की आग जलानी होगी। उनकी गाथा हमें सिखाती है कि चुनौतियाँ कितनी भी

विशाल हों, यदि हृदय में अटल संकल्प की ज्वाला धधक रही हो, तो कोई भी लक्ष्य असाध्य नहीं। रानी लक्ष्मीबाई की जीवनी एक जीवंत ग्रंथ है, जो हर पीढ़ी को साहस, स्वाभिमान और समर्पण का अमर संदेश देता है, प्रेरित करता है कि हम न केवल अपनी विरासत को संजोएँ, बल्कि उसे और गौरवशाली बनाने के लिए संघर्ष करें। रानी लक्ष्मीबाई की जयंती पर, हमें सिर्फ उनकी वीरता को सलाम नहीं करना चाहिए, बल्कि उनके सपनों को जीना चाहिए। वह सपना, जिसमें हर भारतीय अपने हक के लिए खड़ा हो, अपने देश के लिए जिए, और कभी भी अन्याय के सामने न झुके। उनकी जयंती वह आग है, जो हमें बताती है कि हमारी रागों में वही खून दौड़ता है, जो कभी झाँसी की रानी की रागों में दौड़ा था। आइए, इस दिन को सिर्फ याद न करें, बल्कि इसे एक संकल्प बनाएँ—रानी को जैसे निर्भीक, निष्ठावान और नन्हा सा योगदान देने वाले बनने का। क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि भारत की वह आत्मा हैं, जो कभी हार नहीं मानती।

प्रो. आरके जैन “अरिजीत”, बड़वानी (मप्र)

शेख हसीना को मौत की सजा भारतीय कूटनीति की अग्नि परीक्षा

डॉ. घनश्याम बादल

भारत के सबसे निकट पड़ोसी बांग्लादेश में एक बार फिर उठा पटक की आहट सुनाई देने लगी है। वैसे तो पिछले वर्ष जुलाई में वहां जिस तरीके से शेख हसीना की सरकार को छात्र आंदोलन के माध्यम से उखाड़ फेंका गया, वह भी अपने आप में हैरतअंगेज था। लगभग 15 वर्षों से बांग्लादेश पर शासन कर रही बांग्लादेश के संस्थापक शेख मुजीबुर्रहमान की बेटी और तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना की सरकार के खिलाफ पहले से ही महंगाई और दूसरी समस्याओं को लेकर काफी असंतोष था लेकिन मुक्ति दाताओं के पोते पौतियों को दिए जाने वाले आरक्षण के खिलाफ मुद्दा बनाकर एक उग्र आंदोलन हुआ जिसे रोकने में शेख हसीना की सरकार नाकामयाब रही और उसकी परंपरिगत 1400 लोगों की मृत्यु के रूप में सामने आई।

तब भी शेख हसीना की सरकार पर आरोप लगा कि उसने निर्ममतापूर्वक आंदोलन कारियों पर गोलियां चलवाईं जिससे अनेक छात्र-छात्राएं एवं निर्दोष लोग मारे गए। हो सकता है शेख हसीना को उस समय लगा हो कि आंदोलन का दमन करके उनकी सरकार सुरक्षित रह जाएगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ और हालात इतने बिगड़े कि शेख हसीना को न केवल प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा बल्कि देश छोड़कर भी भागना पड़ा। वं इन दिनों में भारत में शरणगत हैं।

बांग्लादेश में गठित एक विशेष न्यायिक अधिकरण ने उन्हें आंदोलन को कुचलने एवं मानवता के विरुद्ध अपराध का पीछा बताकर मृत्यु दंड की सजा सुनाई है। उनके साथ-साथ उनके गुप्तमंत्री असद उज्जमा कमाल को भी फांसी की सजा दी गई है।

वैसे तो किसी देश में ऐसा कुछ घटित होना वहां का आंतरिक मामला है लेकिन यहाँ एक



पंच विशेष तौर पर फंसता है और वह है शेख हसीना का भारत में शरणगत होना और उनके साथ उनके शासनकाल के दौरान भारत के विशेष और सौहार्दपूर्ण संबंध होना। यह तथ्य किसी से छुपा नहीं है कि किस तरह 1971 में जब पाकिस्तान में जुल्फिकार अली भुट्टो की सरकार वहां के बांगलियों का दमन कर रही थी तब भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने वहां सेना भेज कर शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में बांग्लादेश का निर्माण करवा दिया था लेकिन केवल 4 वर्ष के बाद ही 15 अगस्त 1975 में एक सैन्य तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख मुजीबुर्रहमान और उनका पूरा परिवार मार दिया गया और सत्ता एक हाथ से दूसरे हाथ में होती हुई अंततः जनरल जियाउर्रहमान के हाथों में आ गई थी जो बाद में एक राजनीतिक पार्टी बीएनपी खड़ी करके लंबे समय तक बांग्लादेश के राष्ट्रपति रहे हालांकि एक राजनीतिक समस्या के हल के लिए चर्चाएं गए हुए जियाउर्रहमान का भी कल्ल हो गया था, यानी कह सकते हैं कि खून खराबे के साथ सत्ता परिवर्तन बांग्लादेश का एक इतिहास है।

शेख हसीना 1975 में भी इसीलिए बच गई

थी क्योंकि जब उनके परिवार की हत्या हुई, वे जर्मनी में थी बाद में वह वहां से आकर भारत में रहीं और 1981 में उन्हें बांग्लादेश आवासी लीग का अध्यक्ष चुना गया। शेख हसीना ने लंबे समय तक जियाउर्रहमान और उनकी सरकार से लोहा लिया और आखिरकार 1996 में बांग्लादेश की प्रधानमंत्री बनीं लेकिन 2001 में उन्हें जियाउर्रहमान की बेगम खालिदा जिया ने चुनाव में परास्त कर सत्ता से बाहर कर दिया और वह 2001 तक वहां की प्रधानमंत्री रहीं लेकिन कुशल और व्यावहारिक राजनीतिज्ञ तथा जीवत वाली महिला के तौर पर शेख हसीना को जब जरूरत पड़ी तो वे खालिदा जिया के साथ भी मिलकर वहां की सरकारों से लड़ीं किंतु दोनों में संबंध सांप नेवले जैसा ही रहा।

एक परिपक्व राजनीतिज्ञ के तौर पर शेख हसीना 2009 में फिर सत्ता में लौटी और उठा पटकों के बीच 2024 तक सत्ता में आती जाती रहीं। फिर वह सब घटनाक्रम हुआ जब उन्हें बांग्लादेश छोड़कर भागना पड़ा।

शेख हसीना सरकार के पतन के बाद वहां नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस के हाथों

में अंतरिम सरकार के मुखिया के रूप में सत्ता है। उनकी सरकार का दायित्व था कि फरवरी 2026 तक वे बांग्लादेश को एक निर्वाचित सरकार दे देगे और आंदोलन में मारमृतों के हत्या की दोषी लोगों को सजा भी दिलवाएंगे। कहने को यूनुस गैर राजनीतिक व्यक्ति हैं लेकिन सत्ता में बैठा हुआ व्यक्ति बिना राजनीति के रह नहीं सकता इसलिए उन्हें भी जनता को यह दिखाना है कि उन्होंने जन भावनाओं के अनुरूप दायित्वों को उनको नियतित तक पहुंचा दिया है।

शेख हसीना को मृत्यु दंड सुनाने वाली विशेष न्यायाधिकरण में इस सुनवाई का टेलीविजन पर प्रसारण यह बताता है कि यह केवल न्याय की बात नहीं अपितु राजनीति का भी बड़ा खेल है।

जहां यूनुस की सरकार जनता को यह संदेश देना चाहती है कि उसने बिना डरे और झुके हुए आंदोलन के मृतकों को न्याय दिलवाया है। वहीं उनकी कोशिश यह भी हो सकती है कि शेख हसीना और उनकी पार्टी 2026 में होने वाले चुनाव में भाग ही न ले पाएं या उनकी हालत इतनी खराब कर दी जाए कि वह सत्ता में न लौट सकें। जहां न्यायाधिकरण

कहता है कि उसके पास शेख हसीना और असद उज्जमा कमाल को फांसी की सजा दिए जाने के पीछे उपलब्ध ऑडियो, वीडियो आदि हैं, वहीं शेख हसीना ने इस निर्णय पर प्रतिक्रिया में कहा कि उन्हें अपनी बात कहने का मौका ही नहीं दिया गया और एक अलोकतांत्रिक तरीके से थोपी गई सरकार और उसके पिछे के रूप में वहां के न्यायाधिकरण ने पहले से ही तय गए निर्णय को सुनाया है। वहीं सरकार और न्यायाधिकरण का कहना है कि शेख हसीना ने सुनवाई के लिए उपस्थित होने से ही मना कर दिया था।

खैर सियासत में प्रतिशोध केवल बांग्लादेश में ही नहीं, कई देशों में लिया जाता रहा है पाकिस्तान और अफगानिस्तान जैसे देश तो इसके ज्वलंत उदाहरण हैं लेकिन अब यहां पर मुख्य मुद्दा यह है कि निर्णय के तुरंत बाद बांग्लादेश की सरकार ने शेख हसीना को प्रत्यर्पण संधि का हवाला देते हुए बांग्लादेश को सौंप देने का आग्रह भारत की सरकार से किया है।

अब गैर भारत सरकार के पाले में है एक ओर जहां भारत का नैतिक समर्थन शेख हसीना के प्रति है वहीं बांग्लादेश के साथ भी हमारे पुराने राजनयिक संबंध हैं। यदि उन्हें सरकार को सौंप दिया जाता है तो इससे भारत की शरणगत को रक्षा देने की संस्कृति पर बड़ा सवाल खड़ा होगा लेकिन यदि भारत मना करता है तो अंतरराष्ट्रीय कानून भारत के खिलाफ जाएगा और दोनों देशों के बीच संबंध खराब होंगे जो पहले से भी बहुत अच्छे नहीं हैं। इसका असर भारत की आंतरिक एवं अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर पड़ेगा। अब देखें कि भारत सरकार इस प्रश्नोपेश की स्थिति में किस कूटनीति का इस्तेमाल करती है और उसके परिणाम आने वाले समय में क्या निकलते हैं।

(लेखक राजनीतिक समीक्षक एवं

सिविल एक्शन कार्यक्रम – 2025 BSF पंजाब फ्रंटियर / SHQ गुरदासपुर / 117 बटालियन BSF / BOP शाहपुर



अमृतसर, 18 नवम्बर (साहिल बेरी)

सरकारी स्कूल जगदेव खर्द में BOP शाहपुर, 117 बटालियन BSF द्वारा स्थानीय सीमा क्षेत्र की जनता के कल्याण हेतु सिविल एक्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. अतुल फुलजले, IPS, इस्पेक्टर जनरल BSF पंजाब फ्रंटियर ने किया। इस अवसर पर श्री जसविंदर कुमार बिडी, DIG BSF गुरदासपुर सेक्टर, श्री बृज मोहन पुरोहित, कमांडेंट 117 BN BSF सहित अन्य अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत कुल ₹3,09,763/- की लागत से कई महत्वपूर्ण गतिविधियां आयोजित की गईं, जिनमें प्रमुख हैं, सीमा क्षेत्र के युवाओं को कंप्यूटर, मोबाइल रिपेयरिंग और बाइक रिपेयरिंग का वितरण, 04 डॉक्टरों और C-जोन अस्पताल टीम के साथ निःशुल्क चिकित्सा शिविर, महिलाओं के लिए सिलाई-कढ़ाई एवं कौशल विकास प्रशिक्षण, खेल

सामग्री व प्रशिक्षण उपकरणों का वितरण, युवाओं के लिए प्री-रिक्तमेंट प्रशिक्षण, प्रमुख ग्रामीणों, डॉक्टरों व स्कूल शिक्षकों को स्मृति चिन्ह प्रदान, स्कूल को वाटर डिस्पेंसर व बोतल प्रदान, युवाओं के लिए SBI बैंक लोन मेला, हथियार गैलरी और प्रदर्शनी, बॉर्डरमैन मैराथन 2026 एवं कौशल विकास कार्यक्रमों के लिए रजिस्ट्रेशन, कार्यक्रम में लगभग 300 लोगों ने स्वास्थ्य जांच का लाभ लिया और 600 से अधिक उपस्थितजन, जिसमें स्कूली बच्चे भी शामिल थे, हथियार गैलरी और अन्य स्टॉलों को देखने पहुंचे। सिविल प्रशासन और स्थानीय लोगों ने कार्यक्रम की सराहना की।

IG BSF एवं DIG BSF ने कहा कि यह पहल सीमा क्षेत्र की जनता को सशक्त बनाने और BSF तथा स्थानीय जनसमुदाय के बीच संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम का समापन "भारत माता की जय" और "BSF की जय" के नारों के साथ हुआ।

सरकार 30 नवंबर तक मुआवजा राशि बाँटकर बाढ़ पीड़ितों को बड़ी राहत पहुँचाएगी – धालीवाल

केंद्र सरकार अब तक बीएसएफ और सेना की सीमा चौकियों के लिए बाढ़ सुरक्षा फंड जारी करने में नाकाम – धालीवाल धालीवाल ने कार्यक्रम में हल्के के 515 बाढ़-पीड़ित किसानों को स्वीकृत 2.03 करोड़ रुपये की मुआवजा राशि के पत्र वितरित किए

अमृतसर/अजनाला, 18 नवंबर (साहिल बेरी)

आज यहाँ एसडीएम कॉम्प्लेक्स में एसडीएम सरदार रविंदर सिंह अरोड़ा की अध्यक्षता में आयोजित बाढ़-पीड़ितों को स्वीकृत मुआवजा राशि के पत्र वितरण समारोह दौरान मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे विधायक और पूर्व कैबिनेट मंत्री पंजाब श्री कुलदीप सिंह धालीवाल ने कहा कि प्राकृतिक आपदा तथा भीषण बाढ़ की मार झेल रहे लोगों के बीच 30 नवंबर तक मुख्यमंत्री पंजाब श्री भगवंत सिंह मान की सरकार द्वारा स्वीकृत मुआवजा राशि वितरित करने का लक्ष्य तय किया गया है।

उन्होंने कहा कि फसलों और घरों सहित हुए

अन्य नुकसानों के मुआवजे हेतु तैनात अधिकारियों और कर्मचारियों को निर्देश दिए गए हैं कि यदि अब तक सर्वेक्षण से वंचित किसी भी योय बाढ़-पीड़ित किसान की नुकसानग्रस्त फसल या घरों संबंधी कोई शिकायत/जानकारी प्राप्त होती है, तो उसका निपटारा तुरंत किया जाए और 30 नवंबर तक मुआवजा राशि देना सुनिश्चित किया जाए। किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

अपने संबोधन में श्री धालीवाल ने केंद्र सरकार द्वारा पंजाब के साथ कथित भेदभाव की निंदा की और कहा कि पंजाब के बाढ़ पीड़ितों के लिए पंजाब सरकार द्वारा राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन नियमों के तहत भेजे गए 14 हजार करोड़ रुपये से अधिक की मांग पत्र तथा धान की बदरंग या अधिक नमी वाले दानों की सरकार खरीद नियमों में छूट की किसानों के हित में उठाई गई जोदादा मांग पर भी अभी तक केंद्र सरकार की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है।

साथ ही केंद्र द्वारा घोषित 1600 करोड़ रुपये



की टोकन मनी में से एक रुपया भी पंजाब सरकार को नहीं मिला है।

श्री धालीवाल ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा पंजाब के साथ किए जा रहे सौतेले व्यवहार की यह श्रृंखला यहीं नहीं रुकती, बल्कि पंजाब में भीषण बाढ़ से प्रभावित केंद्र के अधिकारक्षेत्र में आने वाली

बीएसएफ और सेना की भारत-पाक अंतरराष्ट्रीय सीमा चौकियों के लिए भी बाढ़ सुरक्षा कार्य हेतु अब तक कोई वित्तीय सहायता नहीं दी गई है।

उन्होंने बाढ़ सुरक्षा कार्य संबंधी मामला केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की मौजूदगी में कल हुई उत्तर क्षेत्रीय परिषद की 32वां बैठक में देश की

एकता और अखंडता के मद्देनजर मुख्यमंत्री पंजाब श्री भगवंत सिंह मान द्वारा मजबूती से उठाए जाने का स्वागत करते हुए धन्यवाद किया।

इससे पहले विधायक और पूर्व मंत्री श्री धालीवाल ने पिंड सारंगदेव, तेड़ा राजपूत, फतेवाल, सुंदरगढ़, चकक औल, जगदेव खर्द,

बलड़वाल, अवाण (नजदीक रमता), मोमनपुरा, माकोवाल, जसर, धंगई, भंडाल, कल्लोवाल, सुल्तान माहल, कोटली बरवाला और वधाई चीमा आदि गांवों के 515 बाढ़-पीड़ित किसानों में फसलों के नुकसान हेतु स्वीकृत 2 करोड़ 3 लाख रुपये की मुआवजा राशि के पत्र वितरित किए।

उद्योग मंत्री ने प्रदर्शनी केंद्रों, पावर रोडमैप की घोषणा की; CII नॉर्डन रीजन मीट में SUJAN ने अमृतसर में ₹150 करोड़ निवेश की प्रतिबद्धता जताई



अमृतसर, 18 नवंबर (साहिल बेरी)

कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (CII) नॉर्डन रीजन की अमृतसर में आयोजित क्षेत्रीय परिषद बैठक में पंजाब सरकार ने अपने दूरदर्शी औद्योगिक सुधार एजेंडा, सेक्टर-विशिष्ट नीतिगत पहलें और बड़े बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की, जिनका उद्देश्य राज्य में निवेश गति को और बढ़ाना है।

CII नॉर्डन रीजन की चेयरपर्सन श्रीमती अंजलि सिंह ने मंत्री संजीव अरोड़ा का स्वागत करते हुए कहा कि पंजाब तेजी से उच्च-गुणवत्ता वाले निवेश का परसंदीदा केंद्र बन रहा है। उन्होंने अमृतसर से शुरू होते हुए पंजाब के हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में SUJAN के ₹150 करोड़ निवेश को राज्य में बेहतर होते निवेश माहौल पर मजबूत मुहर बताया।

उन्होंने कहा, "यह बड़ा निवेश पंजाब के प्रीमियम पर्यटन क्षेत्र को सशक्त करता है और राज्य की आर्थिक पुनर्जीवन प्रक्रिया में बढ़ते विश्वास को दर्शाता है। सरकार के प्रगतिशील कदमों और 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' सुधारों के साथ पर्यटन आधारित निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि की उम्मीद है।"

श्रीमती सिंह ने सरकार को सुझाव दिया कि उपलब्ध भूमि-बैंकों का सक्रिय रूप से प्रचार किया जाए, कृषि व नाशवां उत्पादों के लिए कोल्ड-चेन अवसरचना विकसित की जाए, पर्यटन बढ़ाने के लिए विरासत स्थलों की पहचान की जाए और पंजाब को राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए राज्य ब्रांड एंबेसडर नियुक्त करने पर भी विचार किया जाए।

परिषद को संबोधित करते हुए उद्योग, वाणिज्य, निवेश प्रोत्साहन, बिजली और एनआरआई मामलों के

मंत्री श्री संजीव अरोड़ा ने कहा कि सरकार एक मजबूत, उत्तरदायी और भविष्य-केंद्रित औद्योगिक वातावरण बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

उन्होंने कहा, "पंजाब स्पष्ट और सुधार-उन्मुख रोडमैप के साथ आगे बढ़ रहा है। हमने 24 सेक्टरल समितियां गठित की हैं और एक मास्टर इंडस्ट्रियल पॉलिसी—हर प्रमुख सेक्टर के लिए समर्पित नीतियों के साथ—जल्द ही जारी की जाएगी, जिससे निवेशकों को दीर्घकालिक स्पष्टता मिलेगी।"

मंत्री ने बताया कि पंजाब 2035 तक की ऊर्जा आवश्यकताओं पर आधारित दीर्घकालिक पावर प्लान तैयार कर रहा है, जिसमें थर्मल व अक्षय ऊर्जा का संभावित मिश्रण शामिल होगा।

औद्योगिक अवसरचना को मजबूत करने के लिए, उन्होंने बताया कि मोहाली और लुधियाना में दो नए प्रदर्शनी केंद्रों के लिए भूमि चिन्हित कर ली गई है और टेडर प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। अमृतसर में तीसरे प्रदर्शनी केंद्र की योजना भी बन रही है, जिसके लिए भूमि की पहचान जारी है।

'राइट टू बिजनेस' कानून के तहत किए जा रहे सुधारों का उल्लेख करते हुए मंत्री ने कहा कि ग्रीन श्रेणी और कई और ज श्रेणी की औद्योगिक इकाइयों को मात्र पांच दिनों के भीतर अनुमति मिल जाएगी।

लॉजिस्टिक्स और कनेक्टिविटी पर जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि पंजाब में वर्तमान में 10 ICIDs, दो फ्रेट टेंडर स्पेस, दो अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और चालू अदमपुर हवाई अड्डा मौजूद हैं। आने वाला हलचल हवाई अड्डा राज्य की लॉजिस्टिक क्षमताओं को और मजबूत करेगा।

दबंगाई, घमंड, लालच, और गरीबों से भयंकर जलन ने ली 9 साल के मासूम की जान

राजस्थान में इंसानियत को शर्मसार करने का मामला आया सामने-बीमार बच्चे को इलाज के लिए ले जाते समय दबंग पड़ोसी ने रास्ता रोका-गरीब परिजन बीमार बच्चों को गोद में लेकर 1 घंटे चले पैदल - बच्चों को इलाज के लिए लेने आ रही गाड़ी को घर से लगभग 2 किलोमीटर दूर रोका

परिवहन विशेष न्यूज

राजस्थान। बाड़मेर में 9 साल के मासूम की मौत हो गई बीमार बच्चों को अस्पताल ले जाने के लिए दबंग पड़ोसियों ने रास्ता नहीं दिया। बच्चों को इलाज के लिए लेने आ रही गाड़ी को घर से लगभग 2 किलोमीटर दूर ही रोक दिया उसके बाद परिजन बीमार बच्चों को गोद में लेकर गाड़ी तक पैदल ही पहुंचे। इसके बाद 30 किलोमीटर दूर जिला अस्पताल लेकर गए जहां समय पर इलाज नहीं मिलने पर डॉक्टरों ने बच्चों को मृत घोषित कर दिया।



यह मानवता को शर्मसार करने वाला गंभीर मामला बाड़मेर जिले के सदर थाना इलाके के गरल गांव का है। घटना सुबह 9 बजे की है। मासूम बच्चे की मौत के बाद परिजनों का आक्रोश फूटा और बच्चे के शव को लेकर कलेक्ट पहुंच गए पड़ोसी के खेत में लगा लोहे का गेट खुलवा कर रास्ता खुलवाने को लेकर प्रदर्शन किया। सूचना पर कोतवाली थाना



अधिकारी बलभद्र और डीएसपी रमेश कुमार शर्मा मौके पर पहुंचे उन्होंने परिजनों से समझाया कर बच्चों के शव को अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया।

मृतक बच्चे के चाचा गोवर्धन राम ने रोते रोते बताया मेरा घर गरल गांव की ढाणी में बना है। यहां पड़ोसियों के खेत हैं, मुख्य सड़क से ढाणी में आने वाले रास्ते से पहले ही

लोहे का गेट बनाकर तारबंदी कर रखी है। वह यहां से गाड़ी को आने जाने नहीं देते हैं। हमने सरपंच और स्थानीय जनप्रतिनिधि तथा प्रशासन को कहकर दो बार रास्ता खुलवाया था लेकिन कुछ दिन बाद फिर से लोहे की जाली लगाकर रास्ता बंद कर दिया रविवार रात से भतीजे कमलेश पुत्र दूंगाराम को बुखार आ रहा था आज सुबह 4 बजे उसकी तबीयत बिगड़ी इसके बाद 6 बजे अस्पताल ले जाने के लिए गाड़ी बुलाई थी लेकिन पड़ोसी ने गाड़ी को 2 किलोमीटर पहले ही रोक दिया। ड्राइवर ने हमें फोन करके जानकारी दी की पड़ोसी फाटक को नहीं खोल रहे हैं और गाड़ी नहीं आने दे रहे हैं। तो हम ही भतीजे को गोद में लेकर पैदल ही गाड़ी तक पहुंचे जब तक 7 बज चुके थे। गाड़ी में जिला अस्पताल लेकर गए तो 9 बजे डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया डॉक्टर साहब बोले अगर समय पर अस्पताल आ जाते तो तुम्हारे बच्चे की जान बच सकती थी।

प्रख्यात सन्त स्वामी गीतानंद महाराज "भिक्षु:" का 21वां पुण्य तिथि महोत्सव 23 नवम्बर को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गांधी मार्गस्थित श्रीगीता आश्रम में मुमुक्षु मंडल (रजि.) के तत्वावधान में प्रख्यात सन्त श्रीस्वामी गीतानंद महाराज रभिक्षु: का 21वां पुण्य तिथि महोत्सव 23 नवम्बर 2025 को अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा।

जानकारी देते हुए पूज्य महाराजश्री के परम भक्त रथूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महामण्डलेश्वरों स्वामी डॉ. अवशोषानंद महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित होने वाले इस महोत्सव में

प्रातः 10 बजे से 11:30 बजे तक श्रद्धांजलि सभा आयोजित होगी जिसमें देश के कई प्रख्यात सन्त, विद्वान, धर्माचार्य, राजनेता एवं समाजसेवी आदि महाज्योती का स्मरण कर अपनी श्रद्धांजलि एवं भावांजलि अर्पित करेंगे। तत्पश्चात महामण्डलेश्वरों व श्रीमहत्तों का सम्मान होगा।

इसके अलावा मध्याह्न 12 बजे से सन्त, ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा आदि के कार्यक्रम संपन्न होंगे जिसमें असंख्य व्यक्तियों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराकर उन्हें ऊनी वस्त्र प्रदान किए जाएंगे।

